(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 50, अंक 7, जनवरी, 2015
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

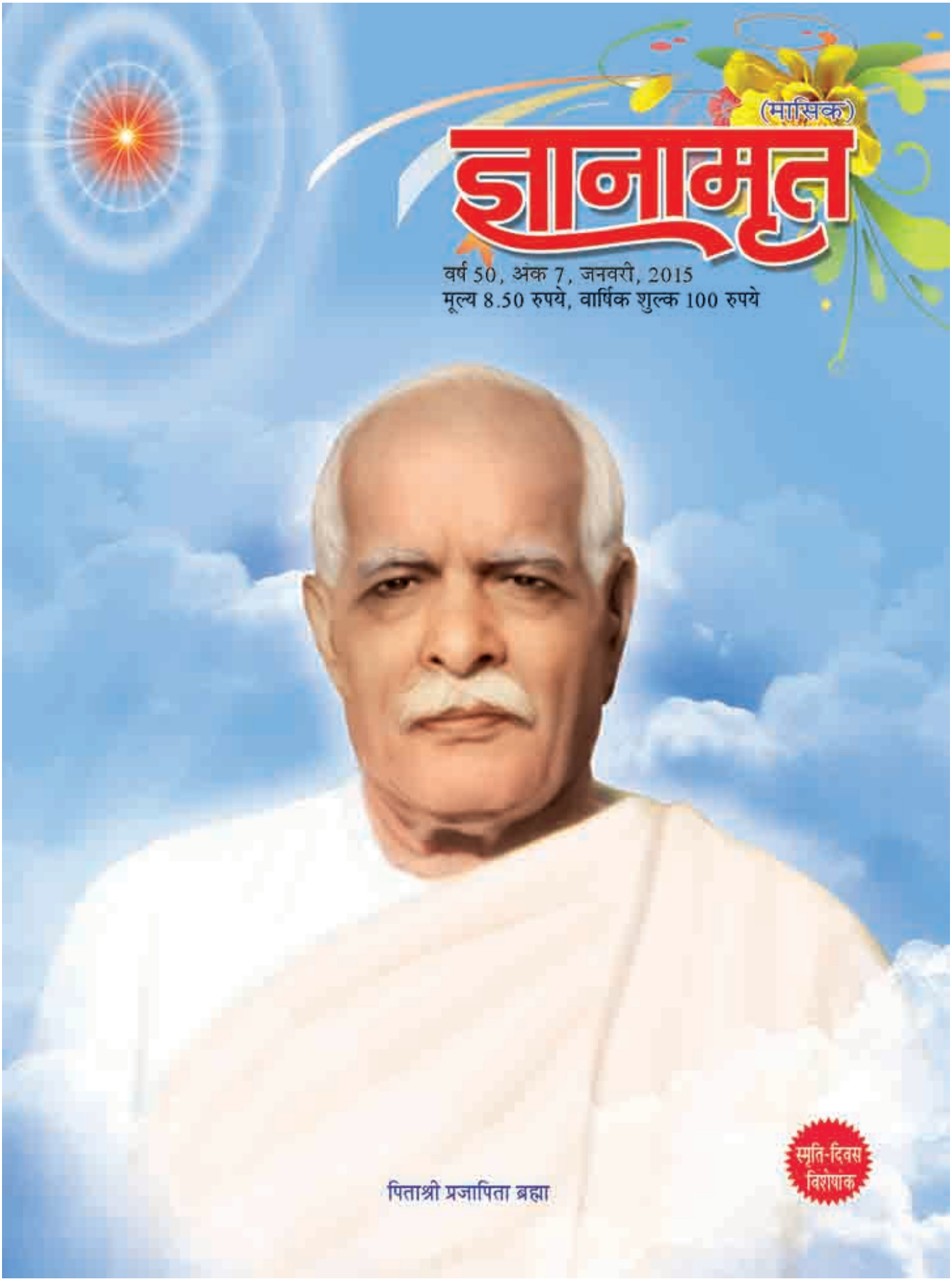

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा

स्मृति-दिवस विशेषांक

1.ओ.आर.सी.(गुड़गाँव)- 14वें वार्षिकोत्सव का उद्‌घाटन करते हुए हरियाणा के राज्यपाल महामहिम भ्राता कप्तान सिंह सोलंकी। साथ में ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.शुक्ला बहन तथा ब्र.कु.गीता बहन। **2.बैंगलुरु-** कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम वजुभाई आर.वाला को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.सविता बहन तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **3.बिलासपुर-** केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री भ्राता जगत प्रकाश नड्डा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अनिता बहन तथा ब्र.कु.रीना बहन। **4.मुंबई (घाटकोपर)-** भारत के रेलमंत्री भ्राता सुरेश प्रभु को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु.प्रमिला बहन। **5.अजमेर-** राजस्थान की मुख्यमंत्री बहन वसुंधरा राजे को ईश्वरीय सौगात देने के बाद ब्र.कु.अंकिता बहन उनके साथ। **6.नाहन-** हिमाचल के मुख्यमंत्री भ्राता वीरभद्र सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रमा बहन। **7.पणजी (गोवा)-** गोवा के मुख्यमंत्री भ्राता लक्ष्मीकांत परसेकर का अभिनन्दन करते हुए ब्र.कु.शोभा बहन। **8.आबू पर्वत-** राजस्थान के कानून तथा कानूनी मामलों के राज्यमन्त्री भ्राता अर्जुन लाल गर्ग को ब्रह्माकुमारीज़ की गतिविधियों की जानकारी देते हुए ब्र.कु.विरेन्द्र भाई। **9.रामपुर (शिमला)-** अन्तर्राष्ट्रीय लावी मेले में हिमाचल की राज्यपाल महामहिम बहन उर्मिला सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कृष्णा बहन तथा ब्र.कु.देवराज नेगी भाई। **10.श्रीगंगानगर-** राजस्थान के गृहमंत्री भ्राता गुलाबचंद कटारिया को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मोहिनी बहन तथा ब्र.कु.विजय बहन। **11.गुवाहाटी-** आसाम के मुख्य न्यायाधीश भ्राता के.श्रीधर राव के सेवाकेन्द्र पधारने पर आत्म-स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.शीला बहन।

नव वर्ष के प्रति दादी जानकी जी का शुभ संदेश

नवसृष्टि रचयिता, सर्वरक्षक, परम कल्याणकारी परमपिता परमात्मा शिव की अति प्रिय सन्तान बहनो तथा भाइयो,

पुरानी दुनिया में नववर्ष के आगमन से मन हर्षित हो नई दुनिया के नजारे देख रहा है। नवयुग की स्मृतियों को ताजा करने वाले नववर्ष की आप सब ज्ञान-हंसों को कोटी-कोटी बधाइयाँ हों।

समय की मांग है कि हम परिस्थितियों को न देख, स्वस्थिति को मज़बूत करें। फल का इन्तज़ार छोड़ शुभ भावनाओं का बीज हर आत्मा में डालते चलें। रुकावटों को रहमदिल बन पार करें। एक की याद में रहते हुए, एकता में रहने की मिसाल कायम करें।

जो हुआ कल्याणकारी, इस स्मृति के साथ कर्म करके उससे मन को न्यारा कर लें। बीती को बिन्दी लगाकर वर्तमान के एक-एक क्षण को सफल करें। सृष्टि के महापरिवर्तन की वेला को देखते हुए अपने को बदलें, दूसरे के बदलने के इन्तज़ार में समय व्यर्थ न गवाएँ।

परमपिता के सच्चे स्नेही बन प्रेम, सुख, शान्ति, आनन्द के सागर में समाए रहें, प्यासी आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली दें। इच्छा मात्रम् अविद्या द्वारा सर्व की मनोकामनाएँ पूर्ण कर उन्हें परमात्मा पिता की समीपता का अनुभव कराएँ।

'विजयी भव' के ईश्वरीय वरदान के साथ-साथ सर्व भाई-बहनों को नव वर्ष और नए युग की बहुत-बहुत मुबारक हो! मुबारक हो! मुबारक हो!

आपकी दैवी बहन

दादी जानकी

अमृत-सूची

- पिताश्री ब्रह्मा चलते-फिरते *(संजय की कलम से)*..... 4
- पिताश्री से मिली शिक्षायें *(संपादकीय)* 5
- ईश्वरीय कारोबार में.....7
- बांध लिया बाबा के रूहानी....10
- अमिट छाप 14
- बाबा ने कहा, बच्चा कभी किसी की निन्दा नहीं करेगा ...16
- बाबा ने कहा, तुम सरलचित्त हो, निर्मल हो 19
- बाबा ने कहा, बड़ा भोला बच्चा लाई हो.....22
- बाबा ने कहा, सबक अच्छा याद किया है.....24
- ओ ब्रह्मा बाबा *(कविता)* 25
- बाबा ने कहा, आप दो बाप बाप की पहचान सभी को दोगे.26
- सचित्र सेवा समाचार 30
- बाबा ने कहा, तुम कमाल कर सकती हो 32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

संजय की कलम से ..

पिताश्री ब्रह्मा चलते-फिरते लाइट हाउस थे

धर्मों के इतिहास में संभवत: ऐसा कोई भी अन्य व्यक्ति नहीं हुआ है जिसने मानव जाति के आध्यात्मिक तथा स्थायी कल्याण के लिए इतना अधिक, इतना कठोर तथा इतना अच्छा कार्य किया हो जैसा कि ब्रह्मा बाबा ने किया। किसी ने भी, कभी भी, किसी भी व्यक्ति को इतना अति महत्वपूर्ण व्यक्ति मानकर व्यवहार नहीं किया और प्रत्येक पुरुष, महिला और शिशु की इतनी देखभाल नहीं की, इतना प्रेम नहीं दिया और इतनी सेवा नहीं की जैसी कि ब्रह्मा बाबा ने की। वे सभी के कल्याण में रुचि लेते थे। कोई भी व्यक्ति इतना उदार और फिर भी इतना विनम्र नहीं रहा है। किसी ने भी ऐसी आध्यात्मिक ऊँचाई प्राप्त नहीं की। वे एक अद्वितीय पुरुष थे जिन्होंने मनसा-वाचा-कर्मणा स्थायी सेवा की। उन्होंने लोगों को ईमानदार, निष्ठावान, सदाशय और चरित्रवान बनने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया।

उनके मीठे शब्द समस्याओं को हल कर देते थे

ब्रह्मा बाबा के मीठे शब्दों की मिठास वर्णनातीत थी। उनके शब्द सुनने वाला व्यक्ति रोमांचित हो उठता था। उनके शब्द इतने नपे-तुले सार्थक और प्रोत्साहक होते थे कि उदास से उदास व्यक्ति में भी आशा का संचार हो जाता था। उनके शब्दों में इतनी प्रचण्ड शक्ति थी कि दिव्य ज्ञान के पथ पर लंगड़ाते हुए चलने वाले आकांक्षी भी आगे बढ़ने लगते थे और न बोलने वाले व्यक्ति भी दूसरों के साथ दिव्य ज्ञान के संबंध में धारा प्रवाह संभाषण करने लगते थे। कमज़ोर से कमज़ोर महिला भी ऐसे कठिन कार्य कर जाती थी जो कि बहुत कम वीर पुरुष कर सकते थे। विभिन्न आध्यात्मिक स्तरों वाली इन विभिन्न आत्माओं के लिए बाबा ऐसे मीठे, उचित और बुद्धिमत्तापूर्ण शब्द कहते थे, जिनसे उनकी समस्याओं का समाधान हो जाता था और उन्हें आंतरिक संतोष प्राप्त होता था। इस प्रकार वे सभी आत्माओं को पहचानते थे। लोग बहुधा बाबा को अपनी स्वयं की राम-कहानियाँ सुनाया करते थे। बाबा हमेशा संक्षिप्त किंतु पूर्ण और स्पष्ट उत्तर देते थे। विभिन्न सेवाकेन्द्रों से प्राप्त हुए सुदीर्घ और सुविस्तृत पत्रों को बाबा का पूर्ण उत्तर कुछ ही वाक्यों का होता था किंतु वह पूर्णत: समाधानकारक होता था।

बाबा आत्माओं को ब्रह्मचर्य और पूर्ण शुद्धता का जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करते थे। ऐसा वे शुष्क प्रवचनों तथा उपदेशात्मक आह्वानों के जरिए नहीं करते थे बल्कि वे प्रेमपूर्वक तथा मधुरतापूर्वक शुद्धता का महत्व समझाते थे और स्नेह तथा मधुर शब्दों से लोगों का दिल जीत लेते थे।

एक बार जब बाबा मुंबई में थे, एक युवा युगल उनसे मिलने आया। कुछ मिनट दिव्य ज्ञान देकर बाबा ने उन्हें श्री लक्ष्मी तथा श्री नारायण का एक चित्र दिया और कहा, ''प्यारे बच्चो, यदि तुम विश्व-चक्र के अपने इस अंतिम जीवन में ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करोगे तो उतने ही महान तथा अच्छे बनोगे जितने कि श्री लक्ष्मी और श्री नारायण। बताओ कि क्या तुम इस बूढ़े बाबा से सहमत हो? शिव बाबा इस बूढ़े मनुष्य के माध्यम से तुम्हें यह बता रहे हैं। क्या तुम्हें हाँ नहीं करनी चाहिए?''

बाबा के इन मधुर शब्दों ने इन पति-पत्नी (युगल) पर पूरा असर डाला और वे नुकीले तीरों की तरह उनके अंतरतम को भेद गए। दोनों ने वहीं और उसी क्षण वचन दिया कि वे जीवन भर ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे।

(शेष..पृष्ठ 13 पर)

पिताश्री से मिली शिक्षायें

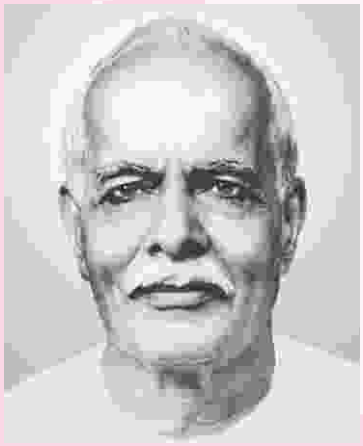

पिताश्री ब्रह्मा बाबा मन, वचन, कर्म की पवित्रता की साक्षात् चैतन्य मूर्ति थे। कोई भी देह अभिमान जनित भाव उन्हें कभी छू तक नहीं पाता था। इतने विशाल ईश्वरीय कार्य की स्थापना और उन्नति के लिए भी उन्होंने सदा ज्ञानबल, योगबल और पवित्रता का बल ही प्रयोग किया। उन्हीं का अनुकरण करते हुए आज लाखों नर-नारियाँ, युवक-युवतियाँ अपने जीवन को निर्विकार बना रहे हैं। पिताश्री ने काम, क्रोध, लोभ इन महाविकारों को जीतकर जगतजीत बनने के लिए जो सबल व्यवहारिक प्रेरणा दी, उसका वर्णन हम यहाँ कर रहे हैं।

काम को जीतो

बाबा कहते, ''काम विकार ज्ञानवान मनुष्य का महावैरी है। यह विकार नरक का द्वार है। इस विकार से युक्त सम्बन्ध एक-दूसरे को हलाहल विष पिलाने के जैसा है अथवा एक-दूसरे पर कुठाराघात (Criminal assault) करने जैसा है। कामी ही वास्तव में शूद्र अथवा मेहतर है, सम्भोग एक प्रकार से गटर (Gutter) में गोता लगाने के तुल्य अथवा सिर पर कूड़े-करकट का टोकरा उठाने के समान है। काम से ही क्रोध की उत्पत्ति होती है और मनुष्य पतित बनता है। आज मुख्यत: इसी विकार के कारण संसार 'नरक' अथवा वेश्यालय के समान बन गया है। बाबा समझाते कि कन्या अथवा कुमारी किसी के आगे नतमस्तक नहीं होती क्योंकि वह पवित्र होती है परन्तु जब उसका विवाह हो जाता है, कामाधीन हो जाती है, तब से उसे सभी के आगे झुकना पड़ता है। स्पष्ट है कि 'काम' विकार ही पतित बनाने वाला है।''

बाबा कहते, ''नर-नारी, श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण की पूजा करते हैं; प्रश्न उठता है कि उनके युगल अथवा दाम्पत्य जीवन में ऐसी क्या विशेषता थी कि आज के पति-पत्नी उनकी पूजा करते हैं। कारण यही है कि श्रीनारायण और श्रीलक्ष्मी कामादि विकारों से मुक्त थे जबकि आज के नर-नारी इनसे युक्त हैं। इसीलिये देवी-देवता पूज्य माने जाते हैं और आज के पति-पत्नी पुजारी एवं विकारी हैं। आज के नर-नारी स्वयं अपने मुख से कहते भी हैं कि, 'हे प्रभु, हम मूर्ख, खल और कामी हैं, हम पर कृपा करो।' परन्तु वे इनसे पूर्ण रूप से छूटने का सही पुरुषार्थ नहीं करते। अत: अब परमपिता परमात्मा इसे फिर से शिवालय (देवस्थान) अथवा पावन बना रहे हैं। वे नर को श्रीनारायण और नारी को श्रीलक्ष्मी बनाने का पुरुषार्थ करा रहे हैं। वे गृहस्थ को सही अर्थ में 'गृहस्थ आश्रम' बनाने के लिये ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग सिखला रहे हैं। अत: हम में से हरेक को चाहिए कि पवित्र बनें, 'काम' रूपी हलाहल विष का पीना और पिलाना बन्द करें क्योंकि अब विश्व की आपातकालीन स्थिति है, विश्व में नैतिक पतन अपनी चरम सीमा पर है और मनुष्य के चारित्रिक पतन के कारण आणविक अस्त्रों-शस्त्रों तथा प्राकृतिक प्रकोपों इत्यादि के द्वारा महासंहार की सम्भावना है।''

बाबा कहते, ''काम विकार को ज्ञान रूपी तलवार और योग रूपी कवच से ही जीता जा सकता है। ज्ञान की नींव 'आत्म-निश्चय' है। स्वयं

को 'आत्मा' निश्चय करने, शरीर को एक 'चोला' मानने तथा अन्य सभी को भी ज्योति-स्वरूप, भृकुटी में निवास करने वाली आत्मा निश्चय करने से ही दृष्टि अपवित्र (Criminal) से बदलकर पवित्र (Civil) होती है। सभी को 'आत्मा' मानने से ही 'भाई-भाई' की भावना स्थिर होती है और उससे ही मनुष्य अतीन्द्रिय सुख अनुभव करने से 'काम' विकार को जीत सकता है। इस दृष्टि द्वारा ही घर-गृहस्थ में रहते हुए, सपत्नीक जीवन में भी काम पर विजय प्राप्त की जा सकती है। ऐसा जो करता है, वही महावीर है, वही मायाजीत बनकर जगतजीत बनने का अधिकारी है, वही ज्ञान तथा योग के सर्वोच्च आनन्द रस का अधिकारी है, वह पद्मापद्म भाग्यशाली है, वह संन्यासियों को भी मात देने वाला, परमपिता को अति प्रिय है।''

क्रोध एक भूत है

बाबा कहते, ''क्रोध एक भूत है। जिस घर में क्रोध है, उस घर के तो घड़े भी सूख जाते हैं। यह कुल का नाश करने वाला है। संसार के सभी झगड़ों का मूल कारण क्रोध है। जो क्रोध करता है गोया अपने पाँव पर स्वयं कुल्हाड़ा मारता है। जैसे गरम तवे पर पानी की बूंद भी नहीं टिक सकती, वैसे ही क्रोधी मनुष्य की बुद्धि में ज्ञान नहीं टिक सकता। क्रोध आत्मा का कड़वापन है। अब सहनशीलता, मधुरता और स्नेह को धारण करके सभी के दिलों को जीतना है। ऐसा ही व्यक्ति प्रभु के दिल रूपी तख्त पर नशीन होकर विश्व-महाराजन के तख्त का अधिकारी होता है। अब मुख से पत्थर निकाल कर मारने वाला बनने की बजाय मुख से पुष्प-वर्षा करने वाला बनना है।''

''क्रोध से कार्य बिगड़ता ही है, कार्य सदा स्नेह, सहयोग, सद्भावना और संतोष ही से संवरता है। क्रोधादि विकारों द्वारा दूसरों के दिल को दुखी करने वाला आखिर दुखी होकर मरता है। मधुरता और स्थायी मुसकान ही मनुष्य के मुख का सच्चा शृंगार है। अत: मनुष्य से देवता बनने का तरीका है – स्नेह और सहनशीलता को अपनाकर दूसरों की सेवा करना। दूसरों पर क्रोध करके पाप के भागी बनने के बजाय अपनी बुरी आदतों के बारे में कड़ा रूप अपनाओ! जोश के संस्कारों को योग द्वारा होश देते हुए अर्थात् शीतल-बुद्धि द्वारा ईश्वरीय मार्ग पर आगे बढ़ो!''

लोभ-वृत्ति का त्याग

बाबा कहा करते थे, ''जो अपने विधिपूर्वक पुरुषार्थ से सहज ही मिलता है वही दूध के बराबर है, जो दूसरों का शोषण करके अथवा ज़बरदस्ती कुछ पाता है, वह रक्त के बराबर है और जो माँग कर पाता है वह तो मृत्यु से भी बुरा है। अत: मनुष्य को चाहिए कि सदा पवित्र पुरुषार्थ को सामने रखे और सब के प्रति कल्याण की भावना रखे। जो मनुष्य कर्मेन्द्रियों के वशीभूत होता है, जो अपने मन का गुलाम होता है, जो आसक्ति और तृष्णा का दास होता है, वही लोभ करता है। वास्तव में वह अपना जीवन कौड़ी-तुल्य बनाता है। यदि मनुष्य की अति-संग्रह की प्रवृत्ति प्रबल है तो इस प्रवृत्ति का परिवर्तन करके ज्ञान-धन का संचय करे, योग की सच्ची कमाई करे और अधिकाधिक सेवा से आशीर्वाद अर्जित करे। ऐसा करने वाले का बेड़ा पार होता है। वरना तो लोभी नर कंगाल ही बना रहता है, वह सदा असन्तुष्टता या ईर्ष्या के संकल्पों में जीवन की घड़ियाँ खो देता है। सच्चा धन तो ज्ञान-धन, सन्तोष-धन और पवित्रतापूर्वक अर्जित धन है और सदा खुशी रूप धन तो योग ही से प्राप्त होता है, अत: इच्छा मात्र को अविद्या मान कर, प्रकृति की पराधीनता से छूटने का पुरुषार्थ है – पवित्रता के पथ पर चलना।''

अन्य विकारों को जीतने के लिए भी पिताश्री ने जो युक्तियाँ बताई हैं, उनका वर्णन फिर किसी लेख में करेंगे।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 15

ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

ईश्वरीय सेवा के तीन मुख्य साधन हैं – तन, मन और धन। तीनों ही अपने-अपने स्थान पर अति आवश्यक हैं।

किसी ने कहा है कि जहाँ हमारा धन होगा वहां हमारा मन होगा। धन के द्वारा भी ईश्वरीय सेवा हो सकती है। पवित्र धन की किताब में मैंने बहुत-सी बातें धन के बारे में लिखी हुई हैं कि कैसे बाबा ने पवित्र धन का अर्थशास्त्र बताया हुआ है और इस पवित्र धन के द्वारा बहुत-सी ईश्वरीय सेवायें हो सकती हैं। बाबा ने कहा है, कम खर्च बालानशीन बनना अर्थात् खर्चा कम करना और अधिक काम करना। यह सिद्धान्त सबके लिए है। मन में भी जो व्यर्थ संकल्प चलते हैं, उन पर भी ध्यान देना चाहिए, उन्हें भी कम खर्च करना चाहिए। ऐसे ही समय का खजाना, श्वास का खजाना आदि आदि किसी भी खजाने को अर्थात् धन को व्यर्थ नहीं गँवाना है। शास्त्रों में 14 प्रकार के धन लिखे हुए हैं उनमें से चरित्र का धन सबसे श्रेष्ठ धन कहा गया है। समय भी श्रेष्ठ धन है।

सन् 1968 के अंतिम पखवाड़े में जब दादी जी मधुबन आये थे तब ब्रह्मा बाबा ने झोपड़ी में बैठकर दादी को धन के बारे में बहुत कुछ समझाया था। बाबा ने दादी जी से कहा कि बच्ची, समर्पित बच्चे भी धन उपार्जन कर सेवा कर सकते हैं। दादी जी ने बाबा से पूछा कि वह कैसे, तो बाबा ने प्रैक्टिकल उदाहरण देते हुए कहा कि बच्ची जैसे यह शिवबालक (जो अभी पाण्डव भवन, दिल्ली में रहते हैं) गैया को सम्भालता है। अब समझो कि गैया रोज 20 लीटर दूध देती है और उस को सम्भालने का रोज का खर्चा 20/- रुपये है और गाय के उस दूध का बाजार का भाव भी 20/- रूपये ही है तो खर्चा और आमदनी एक जैसी हो गई तो शिवबालक के नाम पर कुछ भी जमा नहीं होगा। परंतु 20/- रुपये के खर्चे में 25 लीटर दूध मिलता है तो 5/- रुपये का मुनाफा ड्रामानुसार शिवबालक के नाम पर जमा होगा क्योंकि शिवबाबा अभोक्ता है और ड्रामा निष्पक्ष है। फिर दादी जी ने पूछा कि अगर 20/- रुपये के खर्चे में 15 लीटर दूध आयेगा तो 5/- रुपये का घाटा भी शिवबालक के ही खाते में जायेगा? बाबा ने कहा कि स्वाभाविक है नुकसान भी उसी के नाम पर आयेगा। ब्रह्मा बाबा और दादी जी का यह संवाद सुनकर मैंने उस पर चिंतन किया। हम सबके हाथ में कारोबार है और उसमें धन का उपयोग करना पड़ता है। **हम अगर यज्ञ के धन के कारोबार में त्रुटि रखते या कुछ गड़बड़ करते हैं तो उससे होने वाला सारा नुकसान हमारे ही खाते में लिखा जायेगा और अगर हम मेहनत करके तथा मोल-तोल या भाव करके कम खर्चा करते हैं या बचत करते हैं तो वह सब जमा की पूँजी हमारे खाते में जमा होगी।** इसलिए यज्ञ कारोबार करते हुए कम से कम खर्चे में अच्छे से अच्छा काम करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। बाबा के सभी सेवाकेन्द्र इन्चार्ज भी इस बात को अच्छी रीति जानते हैं और उन्हें इसके बारे में और अच्छा मनन-चिंतन करना चाहिए। हमारे भाई-बहनें अपनी अथक सेवा से अपने-अपने सेवाकेन्द्र पर अच्छे से अच्छे स्थान और साधन बना रहे हैं क्योंकि जितना अच्छा स्थान बनेगा उतनी सेवायें भी अच्छी होंगी। कई बहनें तीर्थस्थानों पर सेवा का लक्ष्य बनाती हैं ताकि तीर्थयात्रियों को बाबा का संदेश मिल जाये। मिसाल के तौर पर इलाहाबाद में कुम्भ मेला 12 साल में एक बार होता है परंतु अन्य वर्षों में

भी माघ मेला आदि होता है उसमें भी बहुत सेवा होती है। हरिद्वार, उज्जैन तथा नासिक में जो कुम्भ मेले होते हैं वहाँ भी अच्छी सेवा होती है। धार्मिक स्थानों पर बड़े-बड़े संत-महात्माओं की सेवा हमारी बहनें इतनी अच्छी रीति से करती हैं कि महात्माओं के मन में परमात्मा शिवबाबा के प्रति श्रद्धा, सद्भाव जागृत होता है।

एक साकार मुरली में बाबा ने कहा है कि अगर आपके पास अपने व अपने परिवार के खर्चे के लिए पर्याप्त धन है तो ज्यादा धन प्राप्ति के लिए समय नहीं देना चाहिए क्योंकि इससे आध्यात्मिक उन्नति के लिए समय नहीं दे सकते।

एक ब्रह्माकुमार भाई गिरिधारी का अनुभव बता रहा हूँ। उनके शरीर छोड़ने पर जब भोग लगाया गया तब वे संदेशी के तन में आये और रोने लगे। उन्होंने कहा कि शरीर छोड़ने के बाद जब मैं सूक्ष्मवतन में अव्यक्त बापदादा के पास गया तो मैंने बाबा से कहा कि बाबा मैं करोड़पति हूं तो मेरा अगला जन्म भी अवश्य ही करोड़पति के घर में ही होगा। बाबा ने उन्हें कहा कि बच्चे, तुम करोड़पति हो नहीं, थे क्योंकि अब तुमने शरीर छोड़ दिया है और तुम्हारी सम्पत्ति के मालिक तुम्हारे बच्चे बने हैं, बाबा नहीं। तुमने जीते जी अपने धन को बाबा के यज्ञ में सफल नहीं किया इसलिए मैं तुम्हें अभी साधारण घर में जन्म दूँगा। उस भाई ने मुझे कहा कि रमेश भाई मेरे जैसा अभागा दुनिया में और कोई नहीं क्योंकि मैं करोड़पति से रोड़पति बन गया। मेरा यह दु:खद अनुभव आप सभी को ज़रूर बताना और कहना कि जितना हो सके उतना अपने धन को जीते जी ईश्वरीय सेवा में सफल करें और श्रेष्ठ भाग्य बनाएँ।

एक राधे माता, जो बाल विधवा थी, मुम्बई के वाटरलू मेन्शन सेन्टर पर आती थी। वह अपने रिश्तेदारों के साथ ही रहती थी। उसके पास उस समय 1200/- रुपये थे। उसने लिखकर दिया था कि मेरे शरीर छोड़ने के बाद ये 1200/- रुपये बाबा के यज्ञ में जमा करना। जब राधे माता ने शरीर छोड़ा और वह अव्यक्त बापदादा के पास गई तो बाबा ने उसे कहा कि बच्ची तुम्हारा जन्म एक बहुत बड़ी रॉयल फैमिली में होगा। तब उसे बहुत आश्चर्य हुआ और उसने अव्यक्त बापदादा से पूछा कि बाबा मैंने ना तो इतनी सेवा की और ना ही मेरे पास इतना धन था, फिर आप मुझे रॉयल फैमिली में कैसे भेज रहे हो? बाबा ने कहा कि बच्ची तुम नष्टोमोहा थी, तुम परीक्षा में पास हो गई। तुम्हारे पास जो भी धन था वह तुमने सौ प्रतिशत बाबा के कार्य में सफल किया। इन बातों से हमें यह सीखने को मिला कि हमारे पास कितना धन है यह जितना महत्वपूर्ण है उसके साथ-साथ यह भी महत्वपूर्ण है कि हम उसमें से कितना हिस्सा बाबा के यज्ञ में सफल करते हैं। हम सब जानते हैं कि सिकन्दर ने जब बेबीलोन में शरीर छोड़ा तब उसके हाथ उसके कफन के बाहर रखे गये क्योंकि मरने से पहले उसने कहा था कि मैंने अपना इतना बड़ा साम्राज्य स्थापन किया, उसकी प्राप्ति के लिए इतनी लड़ाइयाँ लड़ीं और कत्ल किये परंतु अब जब मैं शरीर छोड़ रहा हूँ तब मेरे साथ कुछ भी नहीं जा रहा है। तो सिकन्दर के मुआफिक या गिरीधारी भाई के समान हम खाली हाथ न जायें परंतु अपनी श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाकर जायें क्योंकि भविष्य प्रालब्ध श्रेष्ठ बनाने के लिए विविध प्रकार का धन जमा होना बहुत ज़रूरी है।

तन-मन-धन तीनों के द्वारा सेवा करनी होती है। सबसे ज्यादा तन के द्वारा ईश्वरीय सेवा कर सकते हैं, इससे तन सफल होता है। फिर मन से मनसा सेवा करने से मन सफल होता है और तीसरा धन से सेवा कर सकते हैं। तीनों ही नंबरवार हैं। कोई यह न समझे कि हमें तो सिर्फ बहुत धन कमाना है और अपना भाग्य बनाना है। भाग्य बनाने के लिए जो श्रेष्ठ पुरुषार्थ और समर्पण भाव होना चाहिए, उसमें ये तीनों सेवायें आती हैं।

यज्ञ कारोबार में एकानॉमी का बहुत

ध्यान रखना पड़ता है इसलिए बाबा ने मधुबन में डिपार्टमेन्ट्स बनाये हैं। अगर डिपार्टमेन्ट नहीं होते तो बाहर के लोगों द्वारा कार्य कराने पड़ते और बेहिसाब खर्चा हो जाता। मिसाल के तौर पर बाबा ने यज्ञ में लीगल डिपार्टमेन्ट बनाया है, यज्ञ में जो भी अचल सम्पत्तियाँ ली जाती हैं उसका कारोबार लीगल डिपार्टमेन्ट द्वारा किया जाता है। अगर यह डिपार्टमेन्ट नहीं होता तो अचल सम्पत्ति की कीमत अनुसार वकीलों को खर्चा देना पड़ता अर्थात् सम्पत्ति की कीमत का 5% ज्यादा खर्चा करना पड़ता या और भी ज्यादा हो सकता था। ऐसे ही बाबा ने साबुन बनाने का डिपार्टमेन्ट बनाया है जो कि सिर्फ 25% खर्चे में सर्फ पाउडर तथा कपड़े धुलाई का साबुन बनाता है और उसकी क्वालिटी भी बाहर से ज्यादा अच्छी होती है। इसे ही अव्यक्त बापदादा ने कहा है कि एकनामी और एकानॉमी। एकानॉमी के लिए अनेक प्रकार की बचत योजनायें बाबा ने हमें बताई हैं। अज्ञान काल में मैं समझता था कि बाहर होटल में खाना ही चाहिए तथा सिनेमा भी देखना चाहिए। रविवार शाम को तो मैं घर में खाना खाता ही नहीं था। परंतु बाबा का बनने के बाद वह सब खर्चा बच गया और वह बचत बाबा की सेवा में सफल हो गई, नहीं तो 1960 से पहले मेरा महीने का जेब खर्चा 800/- रुपये से भी ज्यादा होता था।

इसी संदर्भ में दादी जी का एक अमृत वचन याद आता है कि There is enough in the world to satisfy the need of the people but not sufficient for the greed of the people अर्थात् आवश्यकतानुसार धन तो मिल ही जाता है परंतु लोभ की कभी पूर्ति नहीं होती। कहावत भी है कि भगवान भूखे पेट उठाता है परंतु भूखे पेट सुलाता नहीं है। लोभ भी पाँच विकारों में से एक मुख्य विकार है। इसलिए कहां और कितना धन खर्च करना है इस बात का हमें ध्यान रखना है। जितना हम अपना धन ईश्वरीय सेवा में सफल करेंगे उतना ही हमारा भाग्य बनेगा। शंकराचार्य ने संस्कृत में लिखा है जिसका अर्थ है कि धन, ज़मीन, पशु आदि सब यहां ही रहेंगे, जब आप शरीर छोड़ेंगे तब पशु तबेले में ही रहेंगे, पत्नी आपको विदाई देने के लिए आंगन तक आयेगी, मित्र-सम्बन्धी श्मशान तक आयेंगे परंतु उसके बाद आगे का सफर तो आपको अकेले ही करना है। शंकराचार्य जी पूछते हैं कि आगे के सफर को सफल करने के लिए आपने क्या किया है? ग्रीक तत्वज्ञानी ने कहा है कि हम वर्तमान में भूतकाल की कमाई के आधार पर खाते हैं परंतु वर्तमान में अगर हमने भविष्य के लिए बचत नहीं की तो भविष्य में भूखा रहना पड़ेगा।

चौदहवीं सदी में पोप के समय पर, कोई मनुष्य मरता था तो कहते थे कि आप इतने रुपये का दान दो तो हम भगवान को चिट्ठी लिखकर देंगे कि इसका इतने रुपये का प्रालब्ध बनाओ। शुरू में तो 100/- रुपये देते थे तो उसको इतनी ही प्रालब्ध की चिट्ठी मिलती थी। बाद में इसमें कटौती की कि 90/-रुपये दो तो 100/-रुपये वहां मिलेगा, बाद में 80/-, 70/-, 60/- रुपये तक कटौती हुई। इतनी धर्मांधता हुई कि बाद में लोगों ने धर्मनेताओं पर विश्वास करना ही छोड़ दिया। बाद में इसी बात के आधार पर रोमन कैथोलिक धर्म में मतभेद हुआ और बाद में उससे Protestant शाखा की स्थापना हुई।

जब ब्रह्मा बाबा बच्चों को पत्र लिखते थे तब उस पत्र के कोने पर मातेश्वरी जी अपने विचार लिखती थी तथा यादप्यार देती थी। तब मैं उनको कहता था कि आप ऐसा क्यों लिखती हो? तो वे कहती थीं कि मैं बच्चों को सिखाती हूँ कि कैसे एकानॉमी (मितव्ययता) करनी चाहिए। इसलिए अलग कागज खर्च करने की जरूरत नहीं पड़ती। मितव्ययता का जो सुनहरा सिद्धान्त मातेश्वरी जी ने मुझे सिखाया वह मैं आपको बता रहा हूँ। अपना तन-मन-धन ज्यादा से ज्यादा बचत करके बाबा की सेवा में सफल करना चाहिए। ❍

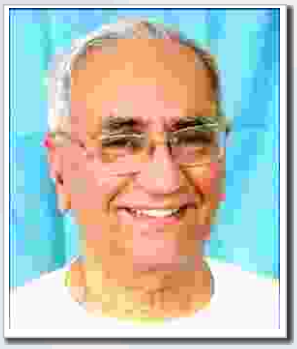

बांध लिया बाबा के रूहानी आकर्षण ने

ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश, इन्दौर

मैं ईश्वरीय ज्ञान में सन् 1955 में आया। तब मैं बी.एस.सी.अन्तिम वर्ष का विद्यार्थी था। हम लोग अम्बाला कैन्ट में रहते थे। पड़ोस में एक विधवा माता रहती थी। उसका पीहर घर गुड़गाँव में था जहाँ ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र खुल चुका था। उसे वहाँ सेवाकेन्द्र पर जाने का मौका मिला था पर ज्ञान ज़्यादा नहीं समझा था, बहनों से उसे बहुत प्यार हो गया था। उन दिनों एक सेंटर पर तीन-चार बहनें भी रहती थीं।

माताजी ब्रह्माकुमारी सत्संग में जाने लगी

उस माता के निमंत्रण पर दो बहनें अम्बाला कैन्ट में उसके घर आईं। एक थी लीला बहन (सिकंदराबाद में सेवारत रही), दूसरी उनकी साथी कृष्णा बहन थी। जिस माता के निमन्त्रण पर बहनें आई थीं उनका लोगों से इतना मिलना-जुलना नहीं था। बहनें उन्हें कहती थी, लोगों को ज्ञान देने की सेवा हमसे कराओ। उन माता जी ने हमारी माताजी को बताया, हमारे घर में दो देवियाँ आई हैं। माताजी जब मिलने गई तो बहनों ने बहुत अच्छा ज्ञान सुनाया। भोजन खिलाते समय माताजी ने मुझसे कहा, दो देवियाँ आई हैं, बहुत अच्छा ज्ञान सुनाती हैं। मैंने पूछा, सुनाओ, क्या सुनाती हैं। ज्ञान तो माताजी को ज्यादा समझ में नहीं आया लेकिन बहनों का प्यार और व्यवहार उनको बहुत अच्छा लगा वो सुनाती रही। थोड़े दिन के बाद हमारी माताजी ने अम्बाला कैंट में गीता भवन में बहनों के रहने की व्यवस्था करा दी और वहाँ सत्संग चलने लगा। माताजी का रोज़ आना-जाना होने लगा।

बहुत अच्छा लगा कल्पवृक्ष का चित्र और कर्मयोग की परिभाषा

एक दिन बहनों ने कहा, हमारे पास झाड़ (कल्प वृक्ष) का जापान का छपा हुआ एक चित्र है, इसको फ्रेम कराना है। माताजी उसे घर ले आई और मुझे कहा, इसको फ्रेम कराना है। मुझे चित्र बड़ा अच्छा लगा क्योंकि उसमें सारे देवी-देवताओं के फोटो थे। मैंने बाज़ार जाकर सबसे बढ़िया फ्रेम उस पर लगवाया। बहनें फ्रेम देखकर दंग रह गईं, फिर माता जी से पूछा, फ्रेम किसने कराया? माताजी ने कहा, मेरे बेटे ने। बहनों ने कहा, उसे हमसे मिलवाओ। माताजी रोज़ कहने लगी, चलो गीता भवन में बहनों से मिलो। मैं सोचता था, मैं इतना पढ़ा हूँ, प्रश्न-उत्तर करूँगा, बहनें दुखी हो जायेंगी। आखिर एक दिन माताजी मुझे बहनों से मिलवाने ले ही गई। गीता भवन में रोज़ 500-600 लोग सत्संग सुनने आते थे। शाम के समय घूमते-घूमते मैं और मेरा दोस्त सत्संग में पीछे की ओर जाकर बैठ गए। सुनते-सुनते मुझे एक बात बहुत पसंद आई। उन्होंने कहा, कर्म करते योग भगवान से जुड़ा रहे, यही कर्मयोग है। कर्मयोग पर मैंने अनेक लेखकों की अनेक पुस्तकें पढ़ी थीं पर कर्मयोग की यह परिभाषा बहुत सरल, सच्ची और अच्छी लगी। फिर मैं रोज़ सत्संग सुनने लगा। जब बहनों को पता पड़ा कि मैं पीछे जाकर बैठता हूँ तो उन्होंने मिलने के लिए मुझे बुलाया।

पहले दिन ही ड्रामा की प्वाइंट समझ में आ गई

मैं मिलने गया, लीला बहन ने मुझे ड्रामा की प्वाइंट सुनाई कि आप और हम पहले भी ऐसे ही मिले थे, यही कमरा था। उनकी इस प्वाइंट पर मुझे ज़रा भी संशय नहीं हुआ। कुछ

बातों के कारण मेरी श्रद्धा जो भगवान में कम हो रही थी, यह जानकर कि यह ड्रामा बना हुआ है, बढ़ गई। इसके बाद लगभग डेढ़ घंटा मैं कृष्णा बहन से सुनता रहा। बीच-बीच में प्रश्न पूछता था लेकिन शंका नहीं थी। मुझे बहनों से बहुत पवित्रता के प्रकम्पन महसूस हुए। ऐसे लगा कि ये बहनें जो बोल रही हैं उसमें कोई बनावट नहीं है।

ब्रह्माकुमारी बहनें हमारे लौकिक घर में रहने लगी

सनातन धर्म मंडल का जो गीता भवन था, वहाँ का पुजारी बहुत क्रोधी था। एक बार वह नाराज़ हो गया। उस समय हमारी माता किसी तीर्थ पर अपनी मन्नत पूरी करने गई हुई थी और हमारा सारा परिवार भी उनके साथ गया हुआ था। पुजारी भोजन हमारे ही घर में करता था। जब माताजी लौटी और देखा कि पुजारी के व्यवहार के कारण ब्रह्माकुमारी बहनों के पास आने वाली सभा उखड़ गई है तो उन्होंने पुजारी को डांटा कि हमारे पीछे से यह क्यों किया। बहनों ने कहा, कोई बात नहीं, हमने बाबा को सन्देश दे दिया है, अब हम वापस जाएंगी। हमने बहनों से कहा, आप चिंता नहीं करो, हम रहने की अन्यत्र व्यवस्था कर देंगे या तब तक आप हमारे घर चलें। तब हम किराये के मकान में थे, अपना मकान बन रहा था। जहाँ मैं पढ़ता था वह ऊपर की जगह हमने बहनों को रहने के लिए दे दी। फिर जानकी दादी भी आ गये। एक कमरे में तीनों बहनें रहती थीं। भोजन नीचे आकर बना लेती थीं। दो महीने तक बहनें घर में रहीं, घर में रोज़ सत्संग होने लगा। कुछ दिनों के बाद एक मकान बहनों के रहने के लिए ढूँढ़ लिया गया। किराया सिर्फ 32 रुपये था।

बाबा की प्यार, दुलार भरी गोद का अनुभव

सन् 1956 में मैं प्रथम बार बहनों के साथ, बाबा से मिलन मनाने माउण्ट आबू आया। उस समय मुख्यालय कोटा हाउस, माउण्ट आबू में था और जब से मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ था उसी समय से मेरे दिल में बाबा से सम्मुख मिलने की बड़ी तीव्र अभिलाषा थी। मिलन की उस घड़ी का मैं बेचैनी से इन्तजार कर रहा था। आखिर वह घड़ी

आयी और हम पार्टी सहित माउण्ट आबू पहुँच ही गये और संध्या समय हम सब बाबा से मधुर मिलन हेतु कोटा हाउस में एकत्रित हुए। मेरा दिल खुशी में ऐसे नाच रहा था मानो मृग-छौना हरे-हरे घास के मैदान में कुलांचे भर रहा हो। मन में एक जोश था, उमंग थी, उत्साह था कि अब तो बाबा से मिलाप होगा, बाबा से रूबरू मिलूँगा। बार-बार घड़ी देख रहा था। आखिर अपने निश्चित समय पर बाबा हम सबके सम्मुख उपस्थित हुए। मुझे ऐसा लगा मानो एक शीतल और मधुर हवा की लहर मुझे छूती हुई निकल गयी, मेरी यात्रा की थकान जैसे कहीं लुप्त हो गई तथा उसका स्थान एक नई उमंग ने ले लिया। थोड़ी देर के लिए मैं सब कुछ भूल-सा गया, ठगा-सा रह गया और अपने चिरपरिचित बाप को देखता रहा। बस, देखता ही रहा। मुझे यह भी नहीं मालूम कि मैं कहाँ हूँ? मुझे क्या करना चाहिए? मुझे बाबा से कैसे अभिवादन करना चाहिए, कैसे उनसे मिलना चाहिए। वास्तव में मुझे बताया ही नहीं गया था कि मुझे कैसे बाबा का अभिवादन करना है। खैर... मैं वैसे ही बाबा की ओर एकटक देखता रहा और अपने आप

ही, हाँ-हाँ आपने आप ही मैं जैसे बाबा के नज़दीक और नज़दीक होता चला गया और फिर.... मैं अपने मीठे-मीठे बाबा की प्यार भरी, दुलार-भरी गोद में पहुँच गया और एक छोटे-से गोद के बच्चे की तरह शान्ति और सुख का शीतल अनुभव करते हुए मैं बाबा की गोद में लेट-सा गया। उस समय का सुख, उस समय की शान्ति और उस समय मुझे मिलने वाला बाबा का अपार स्नेह मैं शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं कर सकता हूँ। बस मैं और मेरा बाबा....। तो यह था मेरा बाबा से प्रथम मधुर मिलन जिसमें बाबा ने मुझे रूहानियत के आकर्षण में बाँध लिया था।

भगवान का आदेश कालेज ज्वाइन करने का

जब मैं ज्ञान में नहीं था तब मेरी भी और पिताजी की भी बड़ी इच्छा थी कि मैं इंजीनियर बनूँ। उस समय इंजीनियर की बड़ी कीमत थी। सन् 1956 में पटियाला में थापर इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग खुला। उसमें मेरा चयन हो गया। इसी बीच मुझे ज्ञान मिल गया। चयन का पत्र देखकर मैं बड़ा दुखी हुआ इसलिए कि मुझे श्रीनारायण जैसा बनना है, इंजीनियर नहीं बनना है। मेरे विचार में इंजीनियर तो बहुत हैं दुनिया में, जो बने हैं वे कहाँ सुखी हैं? मैं तो सारे विश्व की सेवा करना चाहता हूँ। मैंने माताजी से अपने दिल की बात कही कि मैं इंजीनियर नहीं बनना चाहता। माताजी ने पिताजी को बताया। उन्होंने माताजी को कहा कि तुमने मेरे लड़के को बिगाड़ दिया। इतनी मुश्किल से तो प्रवेश मिला है। मुझे बुलावा आ गया था, 15 दिनों के बाद कालेज की पढ़ाई शुरू करनी थी। बहनों को पता पड़ा तो उन्होंने बाबा को पत्र लिखा, बाबा, यहाँ जो परिवार निमित्त है उनके घर में इस प्रकार झगड़ा हो रहा है। बाबा ने आगे होकर मुझे पहली बार पत्र लिखा, मीठे लाडले बच्चे ओमप्रकाश, आप बहुत अच्छे हो, सेवा के निमित्त हो, बाबा की राय है कि आप इंजीनियर कॉलेज ज्वाइन कर लो। इससे भी बहुत सेवा होगी। मैंने सोचा, भगवान कह रहे हैं, मैं उनकी आज्ञा को नहीं टाल सकता। मैंने ज्वाइन कर लिया।

आत्मप्रकाश भाई से मिलन और ज्ञान-चर्चा

कॉलेज में हर एक को कमरा अलग मिलता था। मेरा 112 नम्बर का कमरा था। मेरे पास 113 नम्बर के कमरे में आत्मप्रकाश भाई रहते थे। मैं अपने कमरे में योग करता था, मुरली पढ़ता था, किसी से ज्यादा संपर्क नहीं रखता था। आत्मप्रकाश भाई मेरे कमरे में आते-जाते थे। कभी-कभी वे भारत माता के ऊपर गीत गाते थे। मैं उनसे पूछता था, भारत माता है कौन। वो कहते थे, यही है अर्थात् धरती माँ। मैं कहता था, यह तो जड़ है। इस प्रकार बातचीत शुरू हुई। फिर मैंने आत्मा का ज्ञान सुनाया। तीन-चार दिन थोड़ी बहस की फिर उन्होंने मान लिया कि हम शरीर नहीं, आत्मा हैं। एक दिन मैं योग में बैठते समय कमरे में अगरबत्ती जला रहा था, तभी दियासलाई खत्म हो गई। हम दोनों के लिए एक नौकर दिया हुआ था, वह उस दिन नहीं था, मुझे दियासलाई चाहिए थी। मैं पहली बार आत्मप्रकाश भाई के कमरे में गया। मैंने कहा, आत्मप्रकाश भाई, मुझे दियासलाई चाहिए, आपके पास है? उन्होंने एक पेटी खोली और ढूंढना शुरू किया। तब तक मैं उनकी कुर्सी पर बैठ गया। मैंने कमरे में देखा, जहाँ-तहाँ लिखा हुआ था, I am soul, I am not body. इस प्रकार आत्म प्रकाश भाई भी ज्ञान धारण करने लगे और मुरली सुनने लगे।

बाबा का दिल्ली आगमन, आत्मप्रकाश भाई को दिया पत्र और टोली

इसके बाद मधुबन से बाबा का पत्र आया कि यज्ञ-पिता, यज्ञ-माता दीवाली मनाने दिल्ली आ रहे हैं। बाबा, मम्मा दोनों मधुबन से एक साथ पहली बार आ रहे थे दिल्ली, राजौरी गार्डन में। आत्मप्रकाश भाई बैग लेकर मेरे पास आ गये, बोले, मैं दिल्ली जा रहा हूँ बाबा-मम्मा से मिलने। मैंने उनको एक चिट्ठी लिखकर दी। आत्मप्रकाश भाई जी वहाँ कुछ दिन रहकर बाबा-मम्मा से मिलकर अम्बाला कैन्ट मेरे घर आये। उन्होंने टोली का डिब्बा और बाबा का पत्र मुझे दिया। पत्र में लिखा था, बच्चे, यह बच्चा आ रहा है,

आपको सारा समाचार सुनायेगा, बच्चा बहुत लायक है, होवनहार है, यह सेवा बहुत करेगा। पत्र पढ़कर मुझे लगा, बाबा ने इसे सर्टिफिकेट दिया है तो यह ठीक बच्चा है। आत्मप्रकाश भाई से समाचार सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। इसके बाद हम दोनों पटियाला चले गये। हमको सेंटर खोलना था इसलिए हम होस्टल छोड़कर किराये का मकान लेकर रहने लगे। वहाँ जानकी दादी भी हमारे साथ रही। दादी से जगह-जगह सेवायें कराई। दादी सब सेवा अपने हाथों से करती थी। उनके साथ रहकर उनके जीवन से हमने बहुत कुछ सीखा। फिर सेवा करते-करते पटियाला में सेंटर खुल गया।

भावना का आदर

एक बार मैं जबलपुर के कुछ भाई-बहनों की पार्टी लेकर मधुबन गया हुआ था। इस पार्टी में एक वृद्ध माता अपने साथ एक पोटली में कुछ चावल लेकर आयी थी और उसकी हार्दिक तमन्ना थी कि ये चावल मधुबन में पकाये जाएँ। उसने मेरे पास आकर अपने मन की बात कही। मैं बहुत सोच में पड़ गया कि इतने से चावलों में आखिर होगा क्या? खैर, मैं बाबा के पास पहुँचा और उस माता की इच्छा से बाबा को अवगत कराया। फिर क्या था, बाबा ने उसी समय भोली बहन (जो कि बाबा के रसोईघर की मुख्य बहन थी) को बुलवाया और कहा कि ''जितना भी दूध आया है ना उसका दही मत जमाना, कल उस दूध की खीर बनेगी, एक माता चावल लेकर आयी है, उन्हीं से तुम खीर बना देना।'' फिर तो दूसरे दिन उन चावलों की खीर बनायी गयी और सभी ब्राह्मणों को भोजन के साथ खिलाई गयी जिससे उस माता की प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं रही और वह खुशी से झूम उठी। ऐसे गरीब निवाज़ थे बाबा। बाबा के पास ऊँची-ऊँची कीमती वस्तुओं का मान नहीं अपितु भावना का मान था। वे हरेक की भावना को समझते थे और उसका आदर करते थे। ❍

संजय की कलम से..पृष्ठ 4 का शेष

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बाबा का प्रत्येक शब्द अपने आप में स्वर्णिम था, उनका हर कार्य और हर विचार हम आत्माओं के कल्याण के लिए था क्योंकि वे ज्ञानमय ईश्वर के विश्वासी उपकरण थे। हमें सन् 1966 की एक घटना का स्मरण हो आया है। एक पत्रकार जो कि अनेक वर्षों तक इस संस्था के कार्य का विरोध करता रहा था और जिसने समाचार पत्रों में बाबा की आलोचना की थी, एक बार अपने मित्र के साथ, जो कि बाद में ब्रह्माकुमार बन गया था, बाबा से मिलने माउण्ट आबू आया। बाबा से केवल संक्षिप्त साक्षात्कार के बाद वह पश्चाताप करने लगा – ''बाबा, मैं बहुत ही पापी रहा हूँ। उस समय जबकि सिंध में लोग ओम मण्डली के विरुद्ध आंदोलन कर रहे थे, मैंने आपके घर पर पत्थर फेंके थे और मैंने संस्थान की और आपकी कटु आलोचना की थी किंतु अब मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैंने घोर पाप किया था इसलिए मैं आपसे क्षमा मांगता हूँ।''

बाबा ने मुसकराकर कहा –''जो कुछ हुआ वह नाटक का एक अंश था! कुछ लोग आलोचना इसलिए करते हैं क्योंकि वे इसे पाखण्ड समझते हैं। शिव बाबा बुरा नहीं मानते क्योंकि देर-सवेर सत्य उजागर होगा।''

उनकी प्रेमपूर्ण और पवित्र दृष्टि भी सेवा करती थी

मनुष्य की आँखें उसकी आत्मा की खिड़कियाँ हैं और बाबा के नेत्रों में आध्यात्मिक सम्मोहन था। यदि बाबा किसी पर अपनी दृष्टि डालते थे तो उसे ऐसा महसूस होता था कि वह बाबा के शांति बिखेरते हुए मुखमण्डल की ओर टकटकी लगा कर देख रहा है और वह यह भूल जाता था कि वह कहाँ है तथा अपनी मूल आध्यात्मिक स्थिति में स्थिर हो जाता था। उनकी दृष्टि सभी के लिए कितनी कृपालु थी!

वे एक चलते-फिरते लाइट हाउस थे इसीलिए लोग कहा करते थे कि जो भी व्यक्ति ब्रह्माकुमारी संस्था में सम्मिलित होता है उस पर जादू हो जाता है। वे यह नहीं जानते थे कि बाबा के हृदय में सभी के लिए अपार सद्भाव तथा गहरा और नि:स्वार्थ प्रेम था तथा वास्तविक सहानुभूति तथा अनुकंपा थी। ❍

अमिट छाप

ब्रह्माकुमारी कमलेश, सान्ताक्रुज, मुम्बई

बात सन् 1968 की है, मेरी आयु 12 वर्ष थी। हम दिल्ली, कमला नगर में रहते थे। हमारे पड़ोस में एक बहन रहती थी। वह सेवाकेन्द्र पर जाती थी। उसने हमारी लौकिक माता जी को ईश्वरीय ज्ञान का परिचय दिया, माता जी भी सेवाकेन्द्र पर जाने लगी। उन्हीं दिनों एक बार वहाँ ईश्वरीय ज्ञान की प्रदर्शनी लगी जिसे माता जी के साथ हम बच्चों ने भी देखा। उसके बाद मैं प्रतिदिन सेवाकेन्द्र पर सुबह की क्लास में शामिल होने लगी।

मधुबन जाने की इजाज़त मिली

गुलज़ार दादी तब मुरली सुनाया करती थी। पहले दिन ही मुझे सेवाकेन्द्र का वातावरण और बहनों का जीवन बहुत अच्छा लगा। मुझे संगीत में बहुत रुचि थी। सेवाकेन्द्र पर टेपरिकार्डर द्वारा जो गीत बजाए जाते थे, वे सारे याद हो जाते थे। उस समय बाबा के गीत नहीं बने थे, दुनियावी गीतों का आध्यात्मिक अर्थ बताकर, बाबा बच्चों की उन्नति के लिए उनका प्रयोग करते थे। हम इतने इनोसेन्ट थे कि हमें पता ही नहीं था, ये दुनियावी गीत हैं। जब वही गीत रेडियो पर बजता था तो हम सोचते थे, सेन्टर का गीत बज रहा है। सेन्टर पर जाते-जाते एक दिन पता चला कि एक पार्टी (सेवाकेन्द्र के कुछ भाई-बहनें) मधुबन (आबू पर्वत स्थित पाण्डव भवन) जा रही है। मैंने माताजी को कहा कि मुझे भी वहाँ जाना है। कुछ सफेद फ्राकें मेरे पास थीं, दो और माता जी ने सिलवा दीं और इस प्रकार मुझे मधुबन जाने की इजाज़त मिल गई।

मुझे रोना आया

पूर्वोक्त बात जून, 1968 की है। ब्र.कु.चक्रधारी बहन पहली बार पण्डा (गाइड) बनकर हमारे ग्रुप के साथ मधुबन आई थी। उस समय आबू पर्वत स्थित विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय के सामने के मैदान में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था और वह दिन उसके उद्घाटन का दिन था। मैं उद्घाटन कार्यक्रम में आगे-आगे बैठी थी। तभी एक वरिष्ठ बहन वहाँ आई, उसने मुझे वहाँ से उठा दिया और अपनी बहन को बैठा दिया। इस कारण मुझे बहुत बुरा लगा। मेरे साथ दिल्ली से आई हुई दो कुमारियाँ, जो उम्र में मुझसे काफी बड़ी थीं, कार्यक्रम के दौरान बिछुड़ गई। इन दोनों बातों के कारण मैंने रोना शुरू कर दिया। मेरे ग्रुप की माताओं ने मुझे स्नेह, सान्त्वना देकर चुप कराने की कोशिश की और मैं पाण्डव भवन वापस आ गई।

बाबा ने अपने पास बुलाया

चक्रधारी बहन को मेरे रोने का समाचार तो मिल ही गया था। वे जब बाबा के कमरे के पास से गुज़र रहे थे, तो बाबा ने उन्हें बुलाया और पूछा, बच्ची, आपकी पार्टी ठीक है? बहन जी ने कहा, पार्टी तो ठीक है पर उसमें एक कुमारी रोती जा रही है। बाबा ने कहा, उसको मेरे पास ले आओ। बाबा के ये बोल मेरे लिए तकदीर खुलने का दरवाज़ा बन गए। मेरे बाद के जीवन में बहुत सारे सकारात्मक परिवर्तन इसलिए आए कि उस दिन मैंने बाबा को साकार में देखा।

बाबा ने मुझे गोद में ले लिया

मुझे बाबा के पास ले जाया गया। वर्णन करते समय अभी भी वह दृश्य साकार हो उठा है। बाबा अपने कमरे के बाहर आंगन में (जहाँ ईंटों का फर्श था) चारपाई पर बैठे थे, जिस पर ब्राउन चेक वाली चद्दर बिछी हुई थी। जैसे ही बाबा ने मुझे देखा, मैं फ्राक में अपने पांव छिपाने की कोशिश कर रही थी (उस समय पाण्डव भवन के काफी हिस्से में पक्का फर्श नहीं था। बाबा के कमरे तक चलकर जाते-जाते मेरे पैरों में मिट्टी लग गई थी। बचपन से ही बहुत सफाई पसन्द रही हूँ)। बाबा की दृष्टि पड़ी और उन्होंने मुझे गोद में ले लिया। बाबा ने क्या कहा, मुझे कुछ भी याद नहीं है, पर बाबा का व्यक्तित्व बहुत ज्यादा आकर्षक लगा। मन बोल उठा, ''यह व्यक्ति, व्यक्ति नहीं है, कोई अद्वितीय हस्ती है, सचमुच यह जो सुना है कि इसमें भगवान आए हुए हैं, सत्य ही है।'' बाबा ने कहा, 'बच्ची को यज्ञ की एलबम्स दिखाओ।' बड़ी दीदी को बाबा ने कहा, 'इसे फ्राक सौगात में देना।' मैंने बाबा को कहा, 'बाबा, आपके साथ फोटो चाहिए।' बाबा ने कहा, 'इसका (ब्रह्मा का) फोटो लेकर क्या करोगी?' मैंने कहा, 'नहीं बाबा, आपके साथ फोटो चाहिए।' तब बाबा हमें बगीचे में लेकर गए और फोटो खिंचवाया।

घर में लिखा पत्र

उसके बाद मैंने यज्ञ की सारी एलबम्स देखीं। उनमें से कुछ चित्र हिस्ट्री हाल में लगे हुए हैं। एलबम्स में मैंने साकार बाबा के जो फोटो देखे, उनमें भ्रकुटि के बीच में चक्र दिखाई देता था। वो एलबम्स उसके बाद फिर कभी देखने में नहीं आईं। मुझे उन्हें देखने में दो घन्टे लगे थे। उनसे मैं इतनी प्रभावित हुई कि एक लम्बा पत्र अपनी माता जी के नाम घर में पोस्ट किया। उसमें मैंने बाबा के असाधारण व्यक्तित्व का ही सारा वर्णन किया। मैंने लिखा, 'आप कहते हैं कि इनमें भगवान आये हुए हैं,

सचमुच, ऐसा ही लगता है कि इनमें भगवान आये हुए हैं...।' बाबा के उस व्यक्तित्व की मुझ पर ऐसी अमिट छाप लगी कि बाद के जीवन में जब भी कोई प्रश्न सामने आया, उस दिव्य छवि की स्मृति मात्र से हल हो गया।

बाबा की मुलाक़ात का गहरा प्रभाव

दिल्ली में सन् 1967 में टी.वी. आया। उसी समय मेरा एक स्कूल कार्यक्रम चयनित होकर दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ। मेरा लक्ष्य था कि मुझे टी.वी.के कार्यक्रमों में भाग लेना है और प्ले बैक सिंगर भी बनना है। बाबा के मिलने से मेरे जीवन के ये सारे लक्ष्य परिवर्तित हो गए, इतना गहरा प्रभाव पड़ा उस छोटी-सी मुलाक़ात का। यदि जीवन में कभी कोई अन्य आकर्षण पलभर के लिए आया भी तो भी तुरन्त बाबा का वो मिलन याद आता था और मन पुन: ईश्वर की ओर उन्मुख हो जाता था। उसी मिलन की कमाल है, बाबा पर तन, मन से समर्पित हो गए। ❍

ज्ञानामृत के सर्व पाठकों को नव वर्ष की कोटी-कोटी शुभ बधाइयाँ

बाबा ने कहा,

बच्चा कभी किसी की निन्दा नहीं करेगा

ब्रह्माकुमार मोहन सिंघल, माउंट आबू

श्वेत वस्त्र, गौर वर्ण, उन्नत ललाट, ईश्वरीय नशे व स्नेह में डूबे नयन, सर्व अलौकिक प्राप्तियों की मुसकान, फरिश्तों की सी चाल – दूर से ही ऐसा लगता था जैसे कि कोई दिव्य लोक का व्यक्तित्व इस धरा पर उतर आया हो। ऐसे थे हमारे पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा। बाबा से मेरी पहली मुलाकात सन् 1962 के अन्त में हुई थी। उस समय बाबा कानपुर में आये हुए थे और हम लखनऊ विश्वविद्यालय में बी.एस.सी.की पढ़ाई पढ़ रहे थे। ज्ञान के सम्पर्क में आये कुछ महीने ही हुए थे। लखनऊ से सभी ब्र.कु.भाई-बहनें बाबा से प्रत्यक्ष मुरली सुनने तथा नैन मुलाकात करने बस करके कानपुर आये थे। हम भी उस ग्रुप में थे।

'श्री' के स्थान पर 'मोहन'

जब बस कानपुर पहुँची तो गन्तव्य स्थान पर पहुँचते-पहुँचते कुछ देर हो गई थी तथा बाबा की प्रात:काल की मुरली समाप्ति पर थी। मुरली के पश्चात् लखनऊ से आये भाई-बहनों का बाबा से मिलन हुआ। एक-एक से बाबा मिलते जा रहे थे तथा हालचाल पूछकर टोली दे रहे थे। अन्त में हमारा नम्बर आया। हमें देखते ही बाबा ने कहा, 'आओ बच्चे! बाबा बहुत समय से तुम्हारा आह्वान कर रहा था, इन्तजार कर रहा था।' हम बाबा के सुकथन की गुह्यता नहीं समझ पाये और उत्तर दिया कि 'हाँ बाबा, बस लेट हुई इसलिए हमें भी देरी हो गई।' बाबा ने फिर वही महावाक्य दोहराया तथा आभास कराया कि बाबा का मतलब ''हद'' से नहीं बल्कि ''बेहद'' से है तथा पूरे कल्प व संगमयुग के संदर्भ में बाबा कह रहे हैं। मिलन के दौरान बाबा ने पूछा, 'बच्चे, क्या नाम है?' हमने अपना शारीरिक नाम बताया ''श्री''। बाबा ने फिर पूछा, 'क्या नाम बच्चे?' हमने कुछ ऊँची आवाज़ में वही बताया तो बाबा ने कहा कि देखो बच्चे, 'अभी तो बाबा भी अपने नाम में ''श्री'' नहीं लगा सकता क्योंकि ''श्री'' तो देवताओं के लिए कहते हैं जिनकी आत्मा व शरीर दोनों ही पवित्र होते हैं। अभी तो इस समय न किसी की आत्मा पवित्र है और न ही शरीर इसलिए कोई भी ''श्री'' कहलाने का अधिकारी नहीं। आज से बाबा आपको ''मोहन'' नाम देते हैं और अब आपको ''श्री'' जैसा बनना है, समझा!'' बाबा ने पहली मुलाकात में ही जैसे मुझे अपना पूरा लौकिक-अलौकिक परिचय दे दिया। बाबा ने बड़े प्यार से गले लगाया, गोदी दी, सिर पर हाथ रखा तथा टोली

खिलाई। मुझे इतना अपनापन लगा जो कि आज तक भी नहीं भूलता।

बाबा के निकट, और निकट आने की अनुभूति

सन् 1963 में ''इन्डियन स्कूल ऑफ माइन्स'' इंजीनियरिंग कॉलेज धनबाद में चयन होने के पश्चात् वहाँ पढ़ाई के लिए जाना था। जाने से पूर्व बाबा से पूछा कि धनबाद में तो कोई अपना सेवाकेन्द्र नहीं है तथा होस्टल में रहना व खाना पड़ेगा तो अन्नदोष लगेगा। बाबा ने कहा कि बच्चे, 'दृष्टि देकर बाबा की याद में खाओगे तो वह भी शुद्ध हो जायेगा, जब हम बाबा की याद में पवित्र सृष्टि का निर्माण कर सकते हैं तो क्या भोजन को पवित्र नहीं बना सकते?' एक तरफ तो बाबा ने लौकिक-अलौकिक पढ़ाई पढ़ते हुए ज्ञान में चलने का साहस दिया, ज्ञान-मार्ग का स्पष्टीकरण किया और दूसरी तरफ निकटवर्ती सेवाकेन्द्र ''सिन्द्री'' से भी सहयोग मिला। बाद में धनबाद में ही सेवाकेन्द्र खुल गया। अगले तीन वर्षों तक भोजन की पालना सेवाकेन्द्र से ही हुई। आश्रम से नियमित रूप से हॉस्टल में टिफिन आ जाता था। पढ़ाई के प्रथम वर्ष में ही हमारे एक अन्य साथी भ्राता विनोद कुमार जैन भी ज्ञान में आ गये और इस रीति से हम दोनों ने चार वर्ष तक साथ-साथ पढ़ाई कर अपने को ज्ञान-मार्ग में और परिपक्व किया। इन वर्षों के दौरान बाबा से अनेक बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मधुबन के अतिरिक्त दिल्ली में भी दो बार बाबा से मिले। एक बार माथुर जी की कोठी में जहाँ बाबा आकर रहे थे तथा दूसरी बार दिल्ली में साउथ एक्सटेन्शन में प्रदर्शनी के समय। हर बार बाबा के निकट, और निकट आने की अनुभूति होती रही।

हर सप्ताह आता था बाबा का पत्र

सन् 1967 में इंजीनियरिंग कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् ONGC में चयन हुआ तथा देहरादून में प्रारंभिक ट्रेनिंग के पश्चात् आसाम में ''शिव सागर'' नामक स्थान पर पोस्टिंग हुई। उस समय सम्पूर्ण नॉर्थ-ईस्ट व आसाम में एक भी सेवाकेन्द्र नहीं था। बाबा ने बहुत उमंग-उत्साह भरते हुए कहा कि बाबा ही तुम्हें वहाँ भेज रहा है क्योंकि बाबा के अनेक भोले-भाले बच्चे वहाँ बाबा के सन्देश का इन्तज़ार कर रहे हैं। तुम्हें वहाँ जाकर बाबा का सन्देश देना है, कार्य पूरा होने पर बाबा बुला लेंगे। वहाँ जाकर बाबा की कमाल देखी। लगभग हर सप्ताह बाबा का पत्र आता था जिनमें से काफी पत्र आज भी मेरे पास सुरक्षित हैं। बाबा लिखा करते थे कि वहाँ रोटरी में जाकर भाषण करो, मन्दिर में चित्रों को ले जाकर उन पर समझाओ, शिव सागर लेक (झील) के पास जाकर बैठो, बहुत भक्त आयेंगे, उनको सच्चा ज्ञान सुनाओ आदि-आदि।

समर्पण से सेवा

हम भी प्रतिदिन बाबा की आज्ञा का पालन कर, निमित्त बन यह सेवा करते रहे और देखा कि 3-4 महीनों में ही बाबा के अनेकानेक बच्चे तैयार हो गये। इनमें मारवाड़ी मातायें अधिक थीं। सभी मिलकर मन्दिर के हाल में ही प्रतिदिन क्लास करते थे। हमारा अनुभव है कि यदि हम नि:स्वार्थ भाव से बाबा पर समर्पण हो जाते हैं तो बाबा स्वयं ही हमें निमित्त बनाकर सेवा कराते रहते हैं। चूकि मैं देहरादून से आसाम गया था अत: मेरा सम्पर्क देहरादून सेन्टर की निमित्त प्रेम बहन जी के साथ ही था तथा वहाँ से ही मुझे मुरलियाँ आदि प्राप्त होती थीं। देहरादून में उन दिनों आध्यात्मिक म्यूज़ियम बन रहा था तथा मुझे कुछ दिनों के लिए वहाँ बुलाया गया था। लौकिक कार्य से छुट्टी लेकर मैं पहले देहरादून तथा फिर अपने लौकिक पिताजी के साथ 17 जनवरी, 1969 को प्रात: मधुबन पहुँच गया। मैं अपने आपको बहुत-बहुत सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे 18 जनवरी, 1969 को बाबा के अव्यक्त होने का अनुभव करने तथा बाबा की कर्मातीत अवस्था देखने का अवसर मिला।

बिना बताए जान लेते थे मन की बात

पहले 1962-63 में जब बाबा मिलते थे तो हमें काफी समय देते थे,

हमारी बातें सुनते थे और फिर अपने विचार सुनाते थे। लेकिन धीरे-धीरे ऐसा लगने लगा था कि बाबा गहन अन्तर्मुखी होते जा रहे हैं। बाबा कम समय में ही बच्चों से मिलकर उनके प्रश्नों के उत्तर दे देते थे। हम बाबा से 17 व 18 जनवरी को अनेक बार मिले। हमने अनुभव किया कि बाबा दृष्टि देते थे और मन में जो बातें या प्रश्न होते थे, बिना बताये ही जान लेते थे। कई बार तो एक भी अक्षर बोलने की हमें ज़रूरत नहीं पड़ती थी तथा कुछ वाक्यों में ही बाबा हमारे प्रश्नों का समाधान कर देते थे। यह बाबा की कर्मातीत अवस्था का परिणाम था। जब आत्मा की फरिश्ता स्वरूप, विदेही स्थिति होती है तो संकल्पों के ऊपर सम्पूर्ण विजय प्राप्त हो जाती है तथा वह ''इच्छा मात्रम् अविद्या'' स्वरूप हो जाती है। ऐसी स्थिति में जब अपने संकल्प नहीं होते हैं तो वह दूसरे के संकल्पों को सहज ही पढ़ लेता है तथा उनका समाधान भी कर देता है। शायद इसीलिए ही कहा गया है – मन जीते जगतजीत।

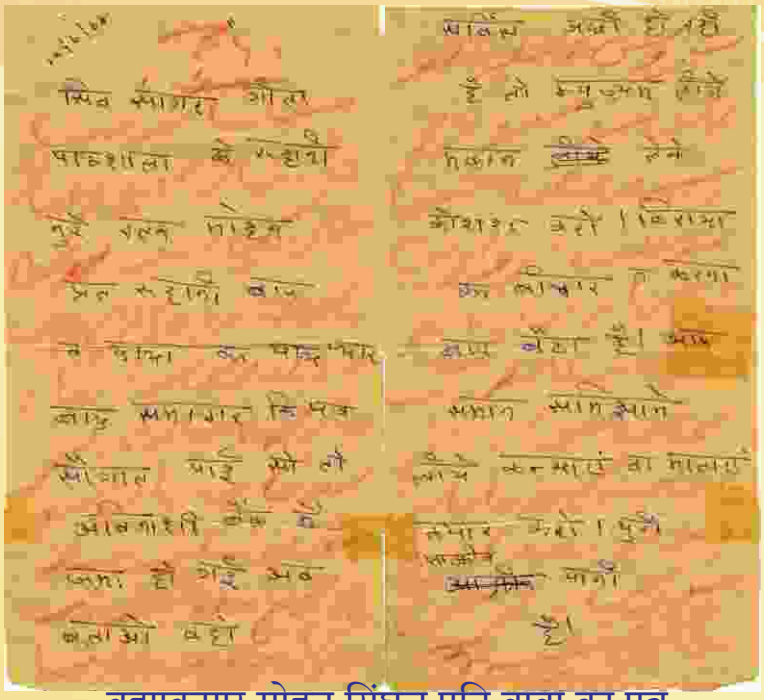

ब्रह्माकुमार मोहन सिंघल प्रति बाबा का पत्र

बहुत मीठा बच्चा है

18 जनवरी को बाबा ने प्रात: क्लास में मुरली नहीं चलाई थी, केवल योग ही कराया था। उस दिन रात्रि क्लास प्रतिदिन की तुलना में लगभग एक-डेढ़ घन्टे पहले कराया। प्राय: बाबा को खाँसी आती थी पर उस दिन पूरी रात्रि क्लास में बाबा को एक बार भी खाँसी नहीं आई जो इस बात का सूचक है कि कर्मातीत बनने पर कर्मभोग के ऊपर योगबल की सम्पूर्ण रीति से विजय हो जाती है। उस रात्रि क्लास में मुरली सुनते-सुनते मेरे मन में संकल्प आया कि बाबा मेरे बारे में कुछ बोलें। सचमुच ही कुछ क्षणों में ही बाबा ने महावाक्य उच्चारे, ''यह बच्चा मोहन है, बहुत मीठा बच्चा है। कभी भी किसी की निन्दा नहीं करेगा, सम्पूर्ण बन जायेगा''। उस रात्रि क्लास में बाबा की अधिकतर मुरली ''निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोय'' इस पर चली थी। बाबा के महावाक्यों को हम सदा ही स्मृति में रखने का प्रयास करते हैं। मुरली के बाद बाबा ने हिस्ट्री हॉल के दरवाजे पर खड़े होकर एक नयी बात कही थी, ''अच्छा! बाबा बच्चों से छुट्टी लेता है, विदाई लेता है।'' ये शब्द बाबा ने पहले कभी नहीं उच्चारे थे। इस बात का राज़ तो उनके अव्यक्त होने के बाद ही सबकी समझ में आया।

बाबा ने 18 जनवरी, 1969 की रात्रि को शरीर छोड़ा और 21 जनवरी, 1969 को दोपहर बाद उनका अन्तिम संस्कार किया गया। तीन दिन बाद भी बाबा का शरीर वैसे ही चमक रहा था। न शरीर काला पड़ा, न ही उसमें कोई दुर्गन्ध थी। यह बाबा के कर्मातीत के साथ-साथ प्रकृतिजीत बनने की ओर इशारा करता है तथा प्रेरणा देता है कि हमें भी ऐसा ही बनना है। ❍

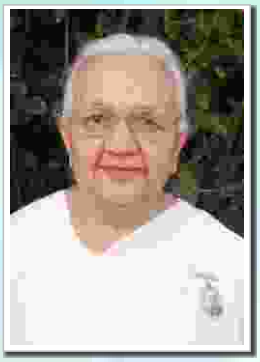

बाबा ने कहा,

तुम सरलचित्त हो, निर्मल हो

ब्रह्माकुमारी डॉ. निर्मला, ज्ञान सरोवर

मेरा लौकिक जन्म सन् 1935 में मुम्बई के एक धार्मिक तथा सम्पन्न गुजराती परिवार में हुआ। सन् 1953-54 में ब्र.कु.ऊषा बहन (रमेश भाई) और मैं इन्टर में प्रथम वर्ष में एक साथ पढ़ती थी। हमारी अच्छी मित्रता थीं। सन् 1962 में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती मुम्बई आई थी और ऊषा बहन, रमेश भाई के घर में रही। उस समय मैं 27 वर्ष की थी। चिकित्सा विज्ञान की विद्यार्थी थी। मैंने लौकिक पिता को कहा था, पढ़ाई पूरी होने तक मुझे शादी नहीं करनी है। वे भी कन्या-शिक्षा के पक्षधर थे। ऊषा बहन ने मुझे रविवार के दिन मम्मा का प्रवचन सुनने के लिए आमंत्रित किया था। मम्मा को जब मैंने देखा तो पाया कि वे बहुत धीर-गम्भीर और रायल थीं। उनका बोलना भी बहुत आफीशियल अर्थात् थोड़ा होता था, केवल काम के शब्द ही बोलती थी। उनका ज्ञान सुनाने का ढंग अपील करता था। उदाहरण देकर समझाती थी। स्वयं धारणामूर्त थीं इसलिए उनकी बातें दिल को लग जाती थीं। उनके प्रवचनों में ईश्वरीय स्नेह भी भरा रहता था, जो सबको आकर्षित करता था।

ड्रामा की प्वाइंट पर निश्चय होने में लगा समय

मम्मा के उस प्रवचन का मुझ पर बहुत अच्छा असर पड़ा। इसके बाद मैंने कुंज दादी से सात दिन का कोर्स किया। कोर्स भी अच्छा लगा परन्तु पूर्ण निश्चय होने में 4 मास लग गए। हमने मान लिया कि शिवबाबा ही भगवान हैं परन्तु ब्रह्मा बाबा के तन में ही आते हैं, वो कैसे मानें? फिर यह सृष्टि-चक्र 5000 वर्षों का ही है, वो कैसे मानें? विज्ञान तो कहता है कि पृथ्वी करोड़ों वर्ष पहले बनी। फिर यह सृष्टि-ड्रामा हूबहू रिपीट होता है, इस बात पर निश्चय होने में समय लग गया। उस समय मैं हास्पिटल में रहती थी, मेरी सरकारी नौकरी थी। सुबह ड्यूटी होती थी इसलिए सुबह क्लास में नहीं जा पाती थी, मम्मा केवल सुबह ही क्लास कराती थी। मैं रोज़ शाम को सेन्टर जाती थी। हमारा घर सेन्टर से ट्रेन द्वारा एक घन्टे की दूरी पर था और हास्पिटल से भी सेन्टर पहुँचने में पौना घंटा लग जाता था, इसके बावजूद मैं रोज़ाना जाती रही।

यज्ञ-इतिहास सुनकर हुआ निश्चय

जब ब्रह्मा बाबा मुम्बई आए तो मैंने हास्पिटल का अपना समय बदल लिया। ड्यूटी प्रात: 11.00 बजे शुरू होने लगी इसलिए बाबा की मुरली सुनने जा पाती थी। मम्मा मुम्बई में 9 मास रही। बाबा मुम्बई में एक बार एक मास रहे, एक बार दो मास रहे। जब आबू में ठण्ड होती थी तो मुम्बई के भाई-बहनें निमन्त्रण देते थे, बाबा आओ, चेकिंग भी कराओ और सेवा भी करो। मुम्बई तो मायावी धरनी है, मम्मा-बाबा ने ही विशेष मेहनत की इस कारण इतनी फली-फूली। मुझे यज्ञ का इतिहास सुनाया गया कि परमात्मा-पिता ने कैसे विघ्नों के समय रक्षा की, बीमारी में मदद की और साक्षात्कारों के द्वारा सन्देश दिए आदि-आदि। दादी सन्तरी की कहानी सुनी कि वे कराची से आबू आए तो घर में सामान छोड़ आए थे। उन दिनों गुप्त अलमारी बनाते थे उसमें वे चांदी के बर्तन भूल आए थे। बाबा ने सन्देश

देकर पूरा विवरण बताया था कि वे क्या-क्या भूल आए हैं जिन्हें वे जाकर ले आए। जब ऐसी-ऐसी बातें सुनीं तो निश्चय हुआ कि यह तो भगवान का ही कार्य है। भगवान जो कहते हैं वह सच है। मुझे पूरा निश्चय हो गया कि सृष्टि का चक्र 5000 वर्ष का है और हूबहू रिपीट होता है।

बाबा ने मुझे फोटो से पहचान लिया

हमने घर में जाकर ज्ञान दिया तो माता-पिता ने एकदम से स्वीकार नहीं किया लेकिन मैं डाक्टर थी, प्रैक्टिस शुरू कर दी थी इसलिए उन्होंने कहा, तुम अभी वयस्क हो, अपना निर्णय स्वयं करो। इस प्रकार उन्होंने मुझे पूरा सहयोग दिया। बाबा पत्र में मुझे टाइटल देते थे, बच्ची, तुम तो निर्मलाश्रम हो, सरल स्वभाव वाली हो, सच्चाई-सफाई वाली हो, चलता-फिरता म्यूज़ियम हो। ऐसी बातें बाबा के मुख से सुनकर मेरा आत्मविश्वास बढ़ता था जिससे मैं सहज अपनी विशेषताओं को पहचानकर उन्नति की ओर अग्रसर होती रही। शुरू-शुरू में हम एक मास के अंदर बाबा को पत्र लिखते थे और अपना पासपोर्ट साइज फोटो भी भेज देते थे। बाबा भी हमको पत्र भेजते थे। उस समय दादी रतनमोहिनी मेरा पत्र बाबा के पास ले गई थी मुम्बई से। दादी ने मुझे कहा कि

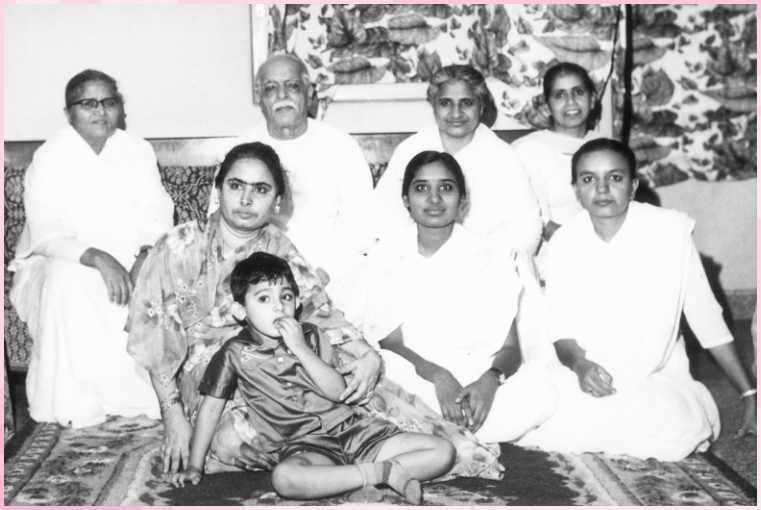

बाबा ने तुमको फोटो से पहचान लिया।

बाबा से राय ज़रूर लेती थी

मैंने दो वर्ष तक मुम्बई के विभिन्न अस्पतालों में प्रैक्टिस की। उसके बाद मुझे फैसला करना था कि दवाखाना कहाँ खोलूँ? पिताजी का विचार था कि मैं कांदिवली में दवाखाना खोलूँ। लेकिन मेरा विचार था कि दूर गांव में जहाँ कोई डाक्टर नहीं वहां प्रैक्टिस शुरू करूँ। मैंने बाबा से पूछा कि बाबा मैं क्या करूँ? तो बाबा ने कहा, बच्ची कांदिवली भी तो एक गांव ही है, भले वहां प्रैक्टिस करो। निश्चिंत होकर मैंने कांदिवली में ही प्रैक्टिस शुरू की जिससे लौकिक पिताजी भी खुश हुए।

डबल डाक्टर बनने की श्रीमत

मुम्बई में उस समय दो ही सेन्टर थे। एक जगह दादी प्रकाशमणि जी थी और दूसरी जगह दादी बृजइन्द्रा जी थी। रमेश भाई ने मुझे कहा, तुम बोरीवली में कोई मकान देखो, क्या कीमत है? हमारे लौकिक पिताजी के घर के पीछे वाली ज़मीन खाली थी। मैंने सोचा, मैं ज़मीन की मांग पिताजी से करूँ लेकिन पिताजी को पूछने से पहले मैंने ब्रह्मा बाबा से पूछा कि क्या लौकिक पिता जी से ज़मीन की मांग करूँ? ब्रह्मा बाबा ने कहा, लौकिक पिता तुम्हें ज़मीन देंगे तो अलौकिक पिता मकान बना देंगे (यह बात सन् 1964-65 की है, तब बाबा मुम्बई आये हुए थे)। बाबा ने देखा, पिता जी ज्ञान में नहीं हैं लेकिन सहयोगी हैं, बाबा ने मुरली में इसकी महिमा की। मैंने मम्मा से कहा, मेरी इच्छा नहीं है कि मेडिकल प्रैक्टिस करूँ, मैं ईश्वरीय सेवा में समर्पित होना चाहती हूँ। मम्मा ने कहा, ब्रह्मा बाबा से पूछना। जब बाबा से पूछा, तो बाबा ने

कहा, तुम्हें दोनों सेवा करनी हैं। डबल डाक्टर बनना है (जब मैं लन्दन में सेवा करके लौटी तब दादी ने समर्पण की छुट्टी दी क्योंकि बाद में ऑस्ट्रेलिया जाना था)।

विदेश में कैसे सेवा करनी है, बाबा ने मुरली द्वारा बताया

सन् 1971 में मैं पहली बार विदेश गई थी। हम अव्यक्त बापदादा से छुट्टी ले रहे थे। विदेश जाने वाले पांच (जगदीश भाई, रमेश भाई, रोजी बहन, शील दादी और मैं), कुमारका दादी और रतनमोहिनी दादी – हम सात के लिए बाबा ने ब्रह्मा बाबा का जो कमरा है उसमें पूरी मुरली चलाई। बाबा ने पूरे डायरेक्शन दिये कि विदेश में कैसे ईश्वरीय सेवा करनी है। बाबा ने कहा, अभी से ही आप वहाँ वायब्रेशन भेजो और जब सेवा करने जाओ तो बाबा को याद करके जाओ। अत: हम जब भी सेवा पर जाते थे तो पहले योग में बैठते थे फिर दरवाज़े से निकलते थे। मुझे व्यक्तिगत रूप से बाबा ने कहा कि अपने लौकिक परिवार को पत्र लिखती रहना, उनके साथ कनेक्शन ठीक रखना। मैं निरन्तर लौकिक परिवार वालों को वहाँ से पत्र लिखती रही। पत्र में सारा भाषण और ईश्वरीय ज्ञान लिखती थी क्योंकि सामने तो ज्ञान सुनते नहीं थे, पत्र तो पढ़ते ही थे।

सेवार्थ फ्लैट नहीं मिलता था

विदेश सेवा के दौरान मेरा लंदन में सेवा अर्थ रुकना हुआ। जब तक फ्लैट मिले, मैं ज्ञान में चलने वाले परिवारों के साथ रही। उन परिवारों में गीता पाठशाला चलती थी। फिर बड़ी मुश्किल से फ्लैट मिला। वहाँ भारतीयों को जल्दी मकान नहीं देते थे। इसके कई कारण थे। एक तो वे कहते थे कि ये कहेंगे कि हम दो हैं पर फिर रहेंगे पाँच लोग। दूसरा कारण यह कि भारतीय सुबह-सुबह जल्दी उठकर नहाते हैं, उन लोगों को इससे असुविधा होती है। तीसरा कारण यह था कि वे सोचते थे, ये भोजन (प्रसाद) बनाऐंगे, खायेंगे, यज्ञ करेंगे, धुँआ होगा, घर खराब हो जाएगा। जयन्ती बहन बहुत पुरुषार्थ करती थी, उसकी भाषा तो उन्हें अंग्रेज़ों जैसी लगती थी, उसे सुनकर कहते थे, आ जाइये पर जब सफेद साड़ी में देखते थे तो कहते थे, मकान किसी अन्य को दे दिया है।

सेवा के प्रारम्भ में परिस्थितियाँ

बाद में जब फ्लैट मिला, सेंटर शुरू हो गया परन्तु सबके घर दूर-दूर थे इसलिए सप्ताह में एक दिन शनिवार अथवा रविवार को क्लास होती थी जिसमें 8-10 जन आते थे। सोमवार और गुरुवार को माताओं की क्लास 2 से 4 बजे तक होती थी, उसमें दो-चार मातायें आती थीं। मेरा मन वहाँ नहीं लग रहा था क्योंकि कल्चर अलग, भाषा अलग। भले ही मैं इंग्लिश जानती थी परन्तु उनका भाषा का उच्चारण समझ में नहीं आता था। मुम्बई में मैं व्यस्त रहती थी, सेन्टर और डिस्पेन्सरी दोनों चलाती थी। लन्दन में फ्री थी। खाना भी अकेले के लिए पकाना अच्छा नहीं लगता था। एक के लिए क्या चार चीज़ें बनायें। क्रिसमस के समय चार दिन कोई भी नहीं आता था सेंटर पर। ऐसे करते 8 मास वहाँ रही। दो-चार ने कोर्स किया, हमारे चित्र भारत के बने हुए थे। पब्लिसिटी के लिए खर्चा करना पड़ता है। साल में दो-तीन पब्लिक प्रोग्राम करते थे परन्तु हॉल मिलना मुश्किल था। शुरू-शुरू में काफी तकलीफ हुई, अपनी कार नहीं थी, आना-जाना भी बस में होता था। मैं बीच-बीच में दादी को पूछती थी कि यहाँ कौन आ रहा है। आखिर रतनमोहिनी दादी का पासपोर्ट तैयार हुआ। उनके कुछ लौकिक वाले इटली में माल्टा में थे वहाँ पर रतनमोहिनी दादी जी और देवी माता दोनों आये, वो 6 मास रहे। बाद में दादी प्रकाशमणि ने मुझे फिर से लन्दन भेजा कि अभी आप अनुभवी बन गई हो और डिस्पेन्सरी से छुट्टी दिलवा दी। रतनमोहिनी दादी वापस भारत में

(शेष..पृष्ठ 29 पर)

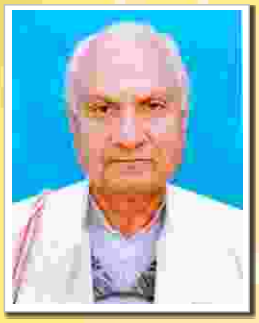

बाबा ने कहा,

बड़ा भोला बच्चा लाई हो

ब्रह्माकुमार प्रेम, धर्मशाला (हि.प्र.)

मेरा जन्म जुलाई, 1942 में हुआ। परिवार में माता जी, पिता जी, एक छोटी बहन, एक छोटा भाई था। पिता जी शिव के भक्त थे। मेरी भी बचपन से भक्ति में रुचि थी। एक दिन मैंने पिता जी से पूछा कि पूजा करते समय किसका ध्यान करूँ, श्रीकृष्ण का, श्रीराम का या अन्य किसी देवी-देवता का? उन्होंने उत्तर दिया, शिव ही अजन्मे हैं, इनके लौकिक माता-पिता नहीं हैं। तब से मैं घण्टों आँखें बन्द कर शिवलिंग के आगे बैठा रहता ताकि मुझे दर्शन हो जायें। बचपन में ही माता जी का देहान्त हो गया, कुछ समय बाद पिता जी ने भी शरीर छोड़ दिया। घर की ज़िम्मेवारी सम्भालते हुए जैसे-तैसे मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की। फिर पोस्ट मैट्रिक (P.M.C) की पढ़ाई धर्मशाला कॉलेज से पूरी कर टीचर की नौकरी मिल गई।

मन को बहुत भाई ज्ञान की बातें

कुछ समय बाद मुझे व्यास नदी प्रोजेक्ट में स्टोर कीपर की नौकरी पंजाब के तलवाड़ा शहर में मिल गई। मैं अपने आप को अकेला महसूस करता तथा माँ-बाप को याद कर बड़ा दुखी और अशान्त रहता था। अगस्त, 1966 में एक दिन अचानक मेरे कार्यालय में एक ब्रह्माकुमार भाई आया और उसने आश्रम चलने का निमन्त्रण दिया। आश्रम मेरे सरकारी निवास के पास ही था। उस दिन तो संकोच-वश नहीं गया परन्तु वहाँ लाल प्रकाश देख कर आकर्षण होता था। दूसरे दिन वह भाई फिर आया और अपने साथ ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर ले गया। वहाँ श्वेत वस्त्रधारी बहन जी ने संस्था का संक्षिप्त परिचय दिया और सात दिन के कोर्स की जानकारी दी। मैं सहज ही कोर्स लेने के लिए तैयार हो गया। कोर्स में मुझे शिव तथा शंकर का अन्तर, आत्मा और शरीर का सम्बन्ध, आत्मा के 84 जन्मों की कहानी, चारों युगों की कहानी, शुद्ध अन्न, पवित्रता आदि बातें मन को बहुत भाईं। फिर तो प्रतिदिन प्रात:काल क्लास करने लगा। कहाँ तो मैं सुबह आठ बजे तक सोता रहता था और अब रोज़ अमृतवेले नहा-धोकर सेवाकेन्द्र पर जाने लगा। खाना मैं स्वयं बनाता था। सम्बन्धियों ने शादी करवाने के लिए मेरी जन्म-पत्री ली थी पर अब मैंने शादी करने से इन्कार कर दिया और कुमार जीवन ही ऊँचा भाग्य लगने लगा। ज्ञान से मैं इतना प्रभावित हुआ कि अपना सरकारी आवास सेवाकेन्द्र की बहनों को देकर स्वयं किराये के मकान में रहने लगा।

नौकरी के बारे में सावधानी

कुछ दिन बाद प्यारे बाबा के पास मधुबन (आबू पर्वत) जाना हुआ। बाबा की गोद ली, मन को बेहद सुख की अनुभूति हुई। ऐसे लगा जैसे लम्बे समय से गुम हुआ मेरा सब कुछ मुझे मिल गया। बाबा का मखमली शरीर स्पर्श करते ही मैं एकदम अपने शरीर को भूल-सा गया। बाबा ने शुक्ला बहन को कहा, बड़ा भोला बच्चा लाई हो। फिर बाबा ने मेरा पूरा पोतामेल (आमदनी, खर्च और घर के सदस्यों की जानकारी) लिया। नौकरी के बारे में बाबा ने सावधानी दी कि बच्चे, स्टोर की नौकरी बड़े ध्यान से करना। खाते हैं अधिकारी लोग और फंसते हैं छोटे। बाबा ने अपने साथ ब्रह्माभोजन कराया और बड़े प्यार से गिट्टी मुंह में डालते हुए पूछा, बच्चे, कौन खिला

रहा है? मैंने झट उत्तर दिया, बाबा, शिवबाबा आप द्वारा खिला रहे हैं। बाबा की सम्मुख वाणी सुनी। मधुबन में भवन बन रहे थे वहाँ आठ दिन सेवा की। बाबा ने अपने हाथों से शरबत पिलाया। बाबा की पालना पाकर लौकिक परिवार और सम्बन्धियों को एकदम भूल गया।

बाबा ने ली परीक्षा

जब दूसरी बार 1968 में मधुबन जाना हुआ तो परीक्षा की घड़ी आ गई। बाबा ने गोदी में लेने से मना कर दिया, कहा, बच्चा प्रतिज्ञा करे कि आजीवन पवित्र रहूँगा तभी गोदी मिलेगी। मैंने बाबा से कहा, असार संसार से मैं तो आगे ही दुखी हूँ अब अपवित्रता में उलझकर क्या करूँगा। बाबा ने कहा, ऐसे नहीं, आपकी निमित्त शिक्षिका गारन्टी ले तब गोदी दूँगा। मेरी आँखों से झर-झर पानी बहने लगा कि मैं सागर के किनारे आकर भी प्यासा ही वापिस जाऊँगा। तभी अम्बाला कैन्ट में सेवारत ब्रह्माकुमारी कृष्णा बहन तथा जालन्धर में सेवारत ब्रह्माकुमारी राज बहन ने कहा, बाबा हम गारन्टी लेते हैं कि यह पवित्र जीवन बितायेगा। तब बाबा ने झट खींचकर अपनी गोदी में बिठाकर थपकी दी, टोली मेरे मुँह में डाली और कहा, बच्चे, मैं तो ऐसे ही चिटचैट कर रहा था, कभी रोना नहीं, अब आपको असली माँ-बाप

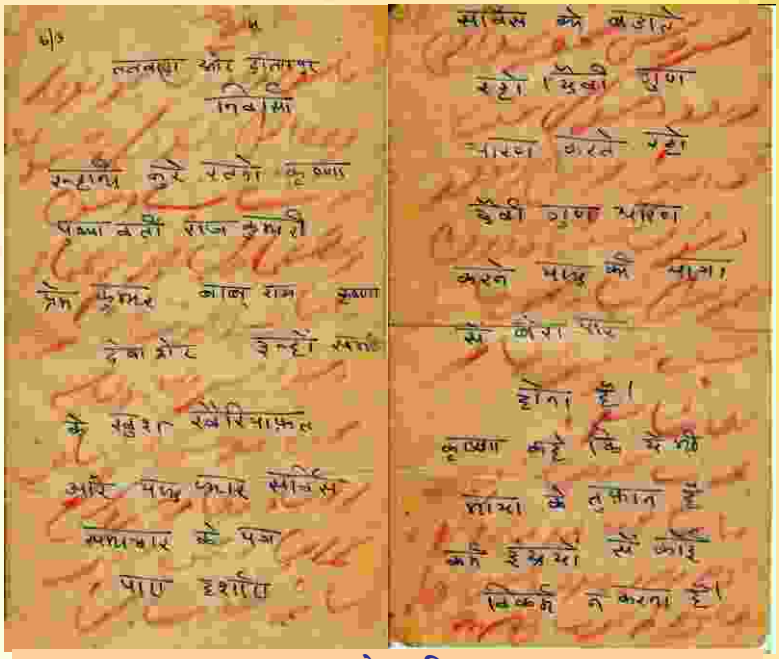

ब्रह्माकुमार प्रेम प्रति बाबा का पत्र

मिल गये ना। मैंने कहा, हाँ बाबा, मुझे मिल गये। बाबा ने गो सून, कम सून की टोली देते समय फिर याद दिलाया कि यह वही बच्चा है जिसने प्रतिज्ञा की है। फिर मीठी दृष्टि दे विदा किया और कहा, बच्चे, पत्र लिखते रहना। सेवाकेन्द्र पर आकर मीठे बाबा को पत्र लिखे जिनका उत्तर बाबा ने दिया। ये पत्र आज भी मेरे पास यादगार रूप में रखे हैं जिन्हें मैं बार-बार देखता हूँ और अपने आप को धन्य मानता हूँ कि भगवान के लिखे पत्र मेरे पास अब भी मौजूद हैं।

बाबा की चेतावनी सच निकली

बाबा ने जो चेतावनी दी थी कि बच्चे, स्टोर की नौकरी बड़े ध्यान से करना, वही बात हुई। स्टोर में लाखों की चोरी हो गई और मैं हक्का-बक्का रह गया। बाबा तो जानीजाननहार हैं। बाबा को खूब दिल से याद किया और मन ही मन सोचने लगा कि मैंने कुछ नहीं किया, पर यह हो कैसे गया। सच्चे दिल की बाबा की याद ने कमाल कर दिया, चोर पकड़े गये और आधा सामान वापस मिल गया। मुझे कुछ भी नहीं हुआ, बाबा ने सूली को कांटा बना दिया। इस प्रकार मेरी रक्षा की। वर्तमान समय मैं धर्मशाला सेवाकेन्द्र (हिमाचल प्रदेश) पर जाता हूँ और यह गीत स्वत:ही गुनगुनाता रहता हूँ, ''बाबा आपने कमाल कर दिया....।'' ❍

बाबा ने कहा,

सबक अच्छा याद किया है

ब्रह्माकुमारी आशा, ओ.आर.सी., गुड़गाँव

मैं अति सौभाग्यशाली हूँ कि जनवरी, 1958 में साढ़े आठ वर्ष की आयु में ही प्यारे बाबा से संबंध जुट गया। वह कहानी और है लेकिन सन् 1960 में, साढ़े दस वर्ष की आयु में प्रथम बार प्यारे बाबा से मधुबन में मुलाक़ात हुई। उन दिनों बाबा बच्चों से मिलते हुए प्रश्न पूछा करते थे कि बाबा से कभी मिले हो? माताओं से पूछते थे कि आपके कितने बच्चे हैं, शिवबाबा को अपना बच्चा बनाया है? रास्ते भर निमित्त बहन याद कराती जाती थी ताकि बाबा के सामने सब पास हो जायें।

गोद में समाकर थपथपाई पीठ

कानपुर से जो चालीस बहन-भाई बाबा से मिलने गए थे उनमें माता-पिता के साथ मैं भी थी। जब हमारी पार्टी की मिलने की बारी आई तब सभी नम्बरवार मिलने लगे। मेरा नम्बर आया तो बाबा ने मीठी दृष्टि देकर पूछा, बच्ची, आप बाबा से पहले कभी मिली हो? बाबा का ऐसा प्रभावशाली व्यक्तित्व था कि मैं निमित्त बहन की बताई हुई बात भूल गई और कहा, नहीं बाबा, पहली बार आपसे मिल रही हूँ। इसके बाद मेरी नज़र निमित्त बहन पर पड़ी, उनका सिखाया हुआ पाठ मुझे फट से याद आ गया और मैंने कहा, हाँ बाबा, पाँच हज़ार वर्ष पहले भी आपसे मिली थी। यह सुनकर बाबा बहुत हँसे और मुझे अपनी गोद में समाकर मेरी खूब पीठ थपथपाई और कहा, बच्ची ने सबक अच्छा याद किया है।

ईश्वरीय पढ़ाई बना संस्कार

बचपन में तो इतनी समझ नहीं थी लेकिन बाबा का यह वाक्य मेरे लिए वरदान स्वरूप सिद्ध हुआ। बाबा के ज्ञान की पढ़ाई मेरा संस्कार बन गया, उस दिन से लेकर आज दिन तक मैंने कभी मुरली मिस नहीं की। बाबा की पढ़ाई ही मेरे इस अलौकिक जीवन का श्वास है। बाबा ने कहा, अच्छा विद्यार्थी कम से कम पाँच बार मुरली पढ़ता है। कुछ वर्षों तक मैं भी पाँच बार बाबा की मुरली पढ़ती रही और आज भी तीन बार मुरली ज़रूर पढ़ती हूँ।

बाबा ने सुना मेरा भाषण

इसके बाद भी बाबा से कई बार मुलाक़ात हुई, हर बार की मुलाक़ात वरदान रूप सिद्ध हुई। एक बार बैंगलोर से हम सात कन्याएं मधुबन आयीं, बाबा हिस्ट्री हाल में सब से मिल रहे थे, मेरा भी नम्बर आया। दीदी मनमोहिनी ने बाबा को मेरा परिचय देते हुए कहा कि बाबा, यह बच्ची इंग्लिश में भाषण करती है। बाबा ने कहा, अच्छा! फिर बाबा ने मुझसे पूछा, बच्ची, इंग्लिश में भाषण करोगी? मैंने कहा, जी बाबा, ज़रूर करूँगी। बाबा ने कहा, बच्ची, किस टॉपिक पर करोगी? मैंने कहा, बाबा, जिस पर आप कहेंगे। बाबा ने कहा, बच्ची, वर्ल्ड पीस पर भाषण करना, बाबा भी आएगा। इसके बाद जब हिस्ट्री हाल से बाहर निकलकर आई तो मुझे होश आया कि यह मैंने क्या कहा, मुझे भाषण करना है वर्ल्ड पीस पर, वो भी बाबा के सामने! फिर मैं रोज़ी बहन के पास गई और उन्हें इस बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आपने बाबा को बोल दिया तो अभी करना ही पड़ेगा। मैंने टॉपिक तैयार किया और शाम को हिस्ट्री हाल में बाबा की संदली पर भाषण करने बैठ गई। अन्दर से बहुत खुश थी कि बाबा नहीं आए क्योंकि बाबा के सामने भाषण करने की हिम्मत नहीं थी। ईशू

दादी किस समय उठी और बाबा को ले आई, मुझे पता ही नहीं चला। मैं भाषण करके, संदली से नीचे उतरकर आराम से बैठ गई। जैसे ही मैं बैठी तो मुम्बई (घाटकोपर) की नलिनी बहन ने मुझे कहा कि तुम्हें पता है, बाबा ने तुम्हारा सारा भाषण सुना है। मैंने पूछा, कहाँ से? बाबा दिखाई तो नहीं दिए। उन्होंने कहा, बाबा ने हिस्ट्री हॉल की पहली खिड़की के पीछे खड़े होकर तुम्हारा भाषण सुना है। फिर बाबा अन्दर आए और मुझे बहुत शाबाशी दी। उस दिन बाबा ने सारी मुरली वर्ल्ड पीस के ऊपर चलाई और मेरा नाम रख दिया इंग्लिश वाली।

औरों को आप समान बनाने का वरदान

सन् 1968 में मधुबन में बाबा से मेरी आखिरी मुलाक़ात हुई। उन दिनों सभी के कमरों में धूपवास हुआ करता था, शुरूआत बाबा के कमरे से होती थी। एक दिन मैं, मेरठ की संतोष बहन और मेरी छोटी बहन नीरा (बाबा हम दोनों को सिस्टर्स का जोड़ा बोलते थे) हम तीनों बाबा के कमरे में धूपवास और गुडनाइट करने गए। बाबा रोज़ शक्तिशाली दृष्टि देते हुए गले लगाकर मिलते थे। उस दिन बाबा ने मुझे शक्तिशाली दृष्टि देते हुए कहा, बच्ची, सदा याद रखना, जैसा कर्म मैं करूँगी, मुझे देख और करेंगे। आज मैं बाबा के उन वरदानों का प्रैक्टिकल में अनुभव कर रही हूँ। बाबा ने ऐसे सेवा के चांस दिए जहाँ बाबा के वरदान सदा स्मृति में रहे हैं और सिद्ध भी हुए हैं। सन् 1969 में मधुबन में कॉलेज में पढ़ी हुई कन्याओं की पहली ट्रेनिंग हुई, मुझे उन सबका ग्रुप लीडर बनाया गया। जब अव्यक्त बापदादा से पहली बार मिली तो बाबा ने कहा, बच्ची, औरों को आप समान बनाना है। तब ऐसा लगा कि साकार रूप के मुझ आत्मा के प्रति उच्चारे गए अंतिम महावाक्य और अव्यक्त रूप से कहे गए महावाक्य कितने समान हैं। ❍

ओ ब्रह्मा बाबा!

रश्मि अग्रवाल, गुमला (झारखण्ड)

आँखों से ओझल होकर भी, साँसों में साकार हो गए,
पंचतत्व के तन को तजकर बेहद के विस्तार हो गए।
लेखराज से बने ब्रह्मा, ब्रह्मा से अव्यक्त फरिश्ता,
अपने त्याग, तपस्या से बने नवयुग के निर्माता।

धर्मग्लानि की वेला में परमात्मा ने माध्यम बनाया,
बड़ी रमणीकता से आपने सबको परमात्म संदेश सुनाया।
बने भागीरथ आप सृष्टि के नवल अभ्युदय में,
बसते हो बाबा आज भी हम बच्चों के हृदय में।

नारी को गौरवान्वित करना रहा प्रथम प्रयास,
इस दुनिया के सुख और वैभव आए न कुछ रास।
आपके व्यक्तित्व में थी एक अजब प्रखरता,
आपके सत्कार्य से निहाल हुई थकी मनुजता।

प्रभु आज्ञा पर चलकर दिखा दी, अध्यात्म की नई राहें,
अपनापन बांटते देखा आपको फैलाकर निज बाँहें।
तपते मन को मिलती आपसे ममता की शीतल बयार,
स्मरण मात्र से बरस जाती है ज्यों संवेदना फुहार।

नज़रों के सामने रहते साकार के वो दिन सुहाने,
आ जाओ बाबा अब, संग मिल गाएँ खुशी के तराने।
आपके कदमों के निशां, बने हैं प्रेरणास्त्रोत हमारे,
देते हो बाबा आज भी श्रीमत के सूक्ष्म इशारे।

ओ ब्रह्मा बाबा, पाकर सकाश आपका,
करें तपस्या आप-सी।
सुनिश्चित करें धरा पर हम,
फिर से सतयुग की वापसी।

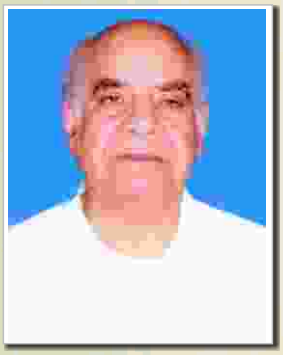

बाबा ने कहा,

आप दो बाप की पहचान सभी को दोगे

ब्रह्माकुमार धर्मपाल, आबू पर्वत

मेरा लौकिक जन्म हीरा, पन्ना, मोती, माणिक्य आदि का व्यापार करने वाले सम्पन्न परिवार में हुआ। आठ साल की आयु से मेरे मन में रहता था कि भगवान कौन हैं, क्या मैं भी उनको देखूँगा? उम्र के साथ-साथ ईश्वरीय लगन भी बढ़ती गई। लौकिक पढ़ाई में दिल नहीं लगा। साधु, संन्यासी, मंडलेश्वर जब 2-4 दिन हमारे घर में ठहरते (घर में धर्मशाला बनवाई हुई थी), उनसे पूछता रहता था, आपको परमात्मा मिले हैं क्या? क्या वे मुझे मिल सकते हैं? कई बार मुझे लाइट का साक्षात्कार हुआ। पिता जी से पूछा, यह क्या होता है? वे कहते, यह प्रभु की माया है, किसी को बताना नहीं है, नहीं तो फिर दर्शन नहीं होंगे। जब कोई कहता, भगवान अंदर हैं, कोई कहता, सभी में हैं, सभी उसी के रूप हैं, कोई कहता, रंग-रूप से न्यारे हैं तो मैं इन बातों से उलझ जाता।

परमात्मा से मिलने के लिए किये यज्ञ-हवन

एक बार एक संन्यासी आठ दिन हमारे लौकिक घर में रहे, वे परमात्मा के बारे में बहुत कहानियाँ सुनाते थे। मेरा मन उनके साथ लग गया। मैंने पूछा, परमात्मा कैसे मिलेंगे? वे कहने लगे, 108 यज्ञ-हवन करने पड़ेंगे। मैंने सुन रखा था, 'सिर दिये परमात्मा मिले तो भी सस्ता जान'। उनके कहे अनुसार मैंने घर से कुछ रुपये लिए, हरिद्वार तीर्थ पर जाने का बहाना बनाया और उनके साथ हो लिया। मुझ छोटे संन्यासी को देख बहुत भक्त आने लगे। वे हमें पैसे, घी, सामग्री आदि दे जाते। हमने 50 यज्ञ सम्पन्न किए, फिर पैसे खत्म हो गए। मेरी लगन तेज थी भगवान से मिलने की। मैंने पूछा, महात्मा जी, मैं और पैसे लेकर आऊँ? महात्मा जी बोले, आपको लोग बहुत दे जाते हैं, जाना नहीं है, जाओगे तो फिर आओगे नहीं? इसी बीच, हवन (लकड़ी) के धुएँ से मेरी आँखें खराब होने लगी और तबीयत भी बिगड़ने लगी। एक डोलानन्द मंडलेश्वर थे, वे यज्ञ-हवन कई बार कर चुके थे पर उनको भी परमपिता परमात्मा नहीं मिले। मुझे श्रीमद्भगवद्गीता की बात याद आई कि यज्ञ-तप करने से मैं नहीं मिलता हूँ। मैं घर में वापस आ गया।

सच्चाई कहीं नहीं मिली

मेरी दादी और माँ ने 'राधास्वामी' का नाम (मन्त्र) लिया हुआ था। वे मेरे को भी वहाँ ले गए। उस समय गद्दी पर बाबा सावन सिंह थे। बहुत सरल स्वभाव के थे, खाना-पीना, रहना बहुत सात्विक था। एक बार बाबा जी से मैंने प्यार से पूछा, क्या आपको परमात्मा मिल गये हैं? क्या आप मुझे उनसे मिला सकते हैं? उन्होंने प्यार से साफ-साफ उत्तर दिया, हम लोग मेहनत कर रहे हैं, कभी तो मिल ही जाएँगे। मैंने दिल की बात बताई, मैं तो उनकी खोज में हूँ, आपकी छुट्टी हो तो कहीं अन्यत्र जाऊँ उन्हें ढूँढ़ने। उन्होंने कहा, जो चाहते हो, करो। मैं गुरुद्वारों, मन्दिरों, मस्जिदों, अखाड़ों, महामंडलेश्वरों, निहंगों आदि सबके पास जाता रहा पर सच्चाई कहीं नहीं मिली। परन्तु मैं भी थका नहीं, लगा ही रहा। कान में यही गूँजता था, 'पता नहीं किस वेश में मिल जाए भगवान रे।' मन में आता था, पिता परमात्मा अगर आप मुझे मिलेंगे तो मैं आपसे बहुत बातें करूँगा और सवाल पूछूँगा और आपका ही संग करूँगा। हम गीत गाते थे, 'तू मिल जाये अगर प्रभु प्यारे, हम गिन-गिन बदले लेंगे सारे...।'

हरिद्वार महाकुंभ में दादियों से प्रथम मिलन

लौकिक पिता जी बहुत धार्मिक, धनी और श्रद्धा वाले

थे। वे गरीबों, सन्तों, महात्माओं, मंडलेश्वरों, शंकराचार्यों आदि को दान जरूर करते थे। एक बार वे मुझे साथ लेकर हरिद्वार महाकुंभ में गये। वही दिन मेरी किस्मत की लॉटरी खुलने का था। रुपयों का थैला पिता जी ने मुझे दे रखा था। वे इशारा करते थे, मैं उतने रुपये निकाल कर दान करता था। बड़े अखाड़े वाले सन्तों को 101 रुपये, महन्तों को 51 रुपये, साधारण को 11 रुपये, इस प्रकार दान का कार्य सारा दिन चलता रहा। उन्हें जल्दी लगी हुई थी कि रात तक पूरा करें।

अचानक छोटी-सी गली आई, उस गली के अन्दर एक झोपड़ी थी जिसके बाहर हमारे दादा आनन्द किशोर जी तपस्या कर रहे थे। पिता जी ने इशारा किया। मैंने रुपये निकालकर देने चाहे परन्तु दादा ने स्वीकार नहीं किए, झोपड़ी के अन्दर जाने का इशारा किया। हम अन्दर गए तो जाते ही बहुत खुशी हुई और लाइट का साक्षात्कार हुआ। वहाँ तपस्या कर रही देवियाँ नज़र आईं, वे थीं दादी प्रकाशमणि जी, दादी गंगे जी और सन्देशी दादी जी। इनसे जैसे लाइट चारों तरफ फैल रही थी। वह दृश्य बहुत मनमोहक था। उन्होंने हमें बैठने का इशारा दिया, नयनों से दृष्टि दी और आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, यह सारा विवरण दिया।

पिता जी को जल्दी लगी थी, मेरा दिल उठने को नहीं था, मन में आ रहा था, यही मेरा ठिकाना है। पिता जी इशारा दे रहे थे कि इन देवियों-माताओं को दक्षिणा दे दो और चलो। उन्हों का इशारा था 51 रुपये का परन्तु मेरा मन कह रहा था, ज्यादा दक्षिणा देनी चाहिए। वो समझ गए। उन्होंने इन्कार नहीं किया। मैंने 501 रुपये दिये और बेमन से पिता जी के साथ चल पड़ा। मन में आया, दोबारा आकर मैं इनसे मिलूँगा।

नारी की निन्दा मत करो

शाम को सब कार्य पूरे कर मैं पुन: झोंपड़ी की तरफ आया तो न वो गली, न झोंपड़ी, न वो देवियाँ मुझे मिलीं। रास्ता भूल गया था। दूसरे दिन वापिस जाना था। खुशी गम में बदल गई। न मिलने का गम लेकर वापिस आ गया। इसके बाद एक बार अमृतसर में दरबार साहब, दुर्ग्याना मन्दिर आदि के दर्शन किये और (उन दिनों ब्रह्माकुमारीज़ का नाम इतना नहीं था) अखबार में पढ़ा कि निर्मल स्वामी जी के द्वारा एक बड़ा सम्मेलन हो रहा है जिसमें सब सम्प्रदाय तथा जनता पधारेगी। मैंने अपनी डायरी में अखबार की कटिंग रख ली और तारीख भी लिख ली। अन्दर पक्का संकल्प किया कि निर्मल स्वामी मेरे पहचान वाले हैं, मैं जरूर सम्मेलन में जाऊँगा। लौकिक रीति में वे हमारे सम्बन्धी (नज़दीक) थे। हम सम्मेलन में गए और वो हमें मिले। मैंने पूछा कि कौन-कौन से सम्प्रदाय आ रहे हैं। उन्होंने कई नाम बताये पर ब्रह्माकुमारीज़ का तो नाम ही नहीं लिया। असल में उस समय लोग उन्हें ओम मंडली वाले कहते थे। हम लौकिक परिवार और गाँव वाले सब उस सम्मेलन को देखने आये। हर सम्प्रदाय के मुख्य आकर स्टेज पर अपनी-अपनी जगह बैठने लगे। कुछ समय बाद आदरणीया दादी जानकी जी, जगदीश भाई और कुछ साथी भी मंच पर बैठे। शंकराचार्य जी चाँदी की कुर्सी पर विराजमान थे। वे बड़ी विचित्र नज़रों से इधर-उधर देख रहे थे। उस समय मेरी सेवा थी कि किसी को कुछ चाहिए तो मदद करना। मैंने शंकराचार्य जी से पूछा, आपको कुछ चाहिए क्या? उन्होंने उत्तर दिया, हमारी स्टेज पर कोई माता-बहन नहीं बैठ सकती है, ना ही भाषण दे सकती है। मैंने कहा, हम चाहते हैं, जनता चाहती है, उन्हें निमन्त्रण दिया गया है, यह स्टेज निर्मल स्वामी जी ने बनवाई है और जिन-जिन महान आत्माओं को बुलवाया है, उन सबका हक है। उन्होंने कहा, नारी क्या करेगी? मुझे एक कहावत याद आई, 'नारी की निन्दा मत करो, इससे हुए कृष्ण और बलराम।' मैंने शंकराचार्य जी से

कहा, और भी मेरे बहुत साथी यहाँ बैठे हुए हैं, वे चाहते हैं कि मातायें-बहनें भी आप के साथ कुछ सुनायें, तो वे शान्त हो गये। इसके बाद सभी ने अपना-अपना ज्ञान सुनाया। जगदीश भाई जी की भी बारी आई, उन्होंने परमात्मा का सत्य परिचय देते हुए हर पहलू को अच्छी रीति स्पष्ट किया और कहा, माताओं-बहनों को सदा ही आगे रखना चाहिए। इस प्रकार सम्मेलन पूरा हो गया।

बाबा को पत्र लिखा खून से

बाद में मैंने पूछा, ये मातायें-बहनें कहाँ रहती हैं। पता चला, किसी मन्दिर में रहती हैं। कुछ समय बाद अमृतसर में शिवबाबा का सेवाकेन्द्र खुल गया। फिर बहनें बटाला (मेरा लौकिक स्थान) आने लगीं। मैं क्लास में जाने लगा और सबके सहयोग से वहाँ भी एक स्थान बाबा को मिल गया। मुझे मधुबन जाने से पहले ही मधुबन का, ब्रह्मा बाबा का साक्षात्कार बाबा ने करवाया और चित्रों द्वारा सारा कोर्स भी साक्षात्कार में ही करवा दिया। मुझे बार-बार यह अनुभव होता था, बाबा कह रहे हैं, आओ बच्चे, आओ, मधुबन आओ, यही आपका घर है। एक दिन बाबा की मुरली में आया, जिस बच्चे को निश्चय हो जाए कि भगवान इस धरती पर आये हैं, वह मिलने के बग़ैर रह नहीं सकता है और नंगे पैर मधुबन में आ जाएगा। यह सुनकर एकदम करेंट जैसा लगा कि अभी बाबा के पास पहुँच जाऊँ, बाबा को पत्र लिखूँ। मन में आया, स्याही से पत्र क्या लिखना है, खून से लिखकर देना चाहिए। मैंने कैंची से हाथ काटकर खून से पत्र इस प्रकार लिखा – 'मेरे प्यारे शिवबाबा, यह पत्र मैं लिखता हूँ खून से, इसको स्याही नहीं समझना, मरना है तेरी गली में अब दूर ना समझना, बाबा हम साथी तेरे हैं अब दूर नहीं रखना।'

दो बाप की पहचान देने का वरदान

इसके बाद प्यारी-प्यारी अलौकिक मातेश्वरी जी भी बटाला में आये और सभी को बहुत प्यार किया। मम्मा ने मधुबन आने का हमें निमन्त्रण दिया, कहा, वह तुम्हारा घर है, आ जाओ और वहाँ बहुत सेवा है। कुछ समय के बाद ब्रह्मा बाबा दिल्ली राजधानी में आए। बाबा से वहाँ हमारी मुलाकात पहली बार हुई। बाबा से श्रीकृष्ण का साक्षात्कार हुआ। जब ब्रह्मा बाबा की गोद में बैठे थे, बाबा ने पूछा, बच्चे, तुम्हारे कितने पिता हैं? हमने उत्तर दिया, हमारे तीन पिता हैं, एक शिव बाबा (परमपिता परमात्मा), दूसरा लौकिक पिता जिसने हमें आप के पास मिलने के लिए भेजा है, एक आप जिसकी गोद में हम बैठे हैं। बाबा बहुत खुश हुए और कहा, बच्चे, 'आप दो बाप की पहचान सभी आत्माओं को दोगे।' यह मुझे बाबा से वरदान मिल गया, आज तक वही सेवा कर रहा हूँ, दो बाप की पहचान देने की।

सिलाई मास्टर बना दिया

दिल्ली में ब्रह्मा बाबा मिलिट्री के मेजर के निमन्त्रण पर आये हुए थे, उनकी ही कोठी में ठहरे थे। एक दिन बाबा ने मुझसे पूछा, 'बच्चे, तुमने सारी दिल्ली देखी है?' मैंने कहा, 'बाबा, आपके सिवाए कुछ नहीं देखा है।' बाबा ने मेजर साहब को बुलाया और कहा, 'इस बच्चे को दिल्ली के विशेष-विशेष स्थान दिखाकर लाओ।' एक दिन बाबा ने पूछा, 'बच्चे, तुम क्या सीखे हुए हो? कुछ करना जानते हो? यज्ञ में तो हर काम सीखा हुआ ही रह सकता है। क्या आपको कपड़ा सिलाई करना आता है?' मैंने उत्तर दिया, 'जो सिखाओगे वो सीखूँगा, हाँ, सोना, हीरा, नग, मणका, मोती पहचानना आता है।' बाबा बोले, 'आपको बहुत कुछ सीखना है, ये तो विनाशी चीजें हैं, बाबा ने छोड़ दी तो आपको भी छोड़नी पड़ेंगी। आपको ज्ञान-रत्नों का धन्धा करना है।' इतने में बाबा के सामने एक भाई आ गया जो गुडगांव में सिलाई का काम करता था। उसका नाम था हरि भाई। बाबा ने उससे हाथ मिलाया और उसका हाथ मेरे हाथ में देकर उसको कहा, इस बच्चे को आप सिलाई मास्टर बना दो। कमाल है बाबा की जो मुझे सिलाई मास्टर

बना दिया। बाबा कहने लगे, पूरा काम सीखकर जल्दी मधुबन आना है। जब हरि भाई के पास थे, बाबा रोज़ पत्र द्वारा पूछते रहते थे कि बच्चे अभी तक कितना सीखा है। छह मास में हमको हरि भाई ने कुर्ता, पायजामा, पेटीकोट, ब्लाउज आदि सिलाई करने सीखा दिए।

छह मास के बाद हमारा मधुबन में आना हो गया। बाबा-मम्मा हमें बहुत प्यार करते, ज्ञान की लोरी देते, घुमाते-फिराते, सेवा पर भेजते। बर्तन सफाई करना, जूते-चप्पल को टाँका लगाना, सिलाई करना, प्रेस करना आदि सब काम भोली दादी और मम्मा हमें सिखाती। आबू पर्वत की गुफाओं में बहुत साधु-महात्मा रहते उनकी जाकर सेवा करते और बहुतों को इकट्ठे करके मधुबन में ले आते। उस समय बेगरी पार्ट चल रहा था। जिनको हम लेकर के आते उन्हें दादियाँ मुरमुरे तथा गुड़ की टोली बनाकर खिलाती।

भोजन छोड़कर भी पहले ज्ञान समझाओ

एक दिन बाबा ने मुरली में कहा, बच्चों को हर काम में बहुत होशियार होना है। कोई ज्ञान सुनने आये तो खाना खाते छोड़कर भी उसकी जाकर सेवा करनी है, इसी को कहते हैं सच्ची सेवा। यह सुन मेरा तो मन हर्षित, मुख उजला, दिल बाग-बाग हो गया, भाग्य खुल गया। वह बहुत शुभ दिन था मेरे लिए। मैं बड़े प्यार से बाबा की याद में भोजन कर रहा था। बाहर घण्टी बजी। मुझे बाबा की सुबह की बात याद आ गई कि भोजन छोड़कर भी ज्ञान सुनाने जाना चाहिए। जिसकी ड्यूटी थी वह भाई भी भोजन कर रहा था, वह नहीं उठा, मैं चला गया। ज्ञान सुनने वाला सिन्धी अधिकारी था। उस समय वह ज्ञान का बहुत प्यासा था। वह पक्का बाबा का बच्चा बन गया। उस दिन से मेरी तो किस्मत ही बदल गई, बाबा-मम्मा ने सब कार्य छुड़ाकर मेरी गाइड की सेवा लगा दी कि सबको ज्ञान सुनाना है। बाबा-मम्मा ने बहुत-बहुत प्यार किया। इसके बाद हम सेन्टर खोलते गए। बाबा के अव्यक्त होने के बाद आदरणीया प्यारी-प्यारी, मीठी-मीठी दादी प्रकाशमणि ने हमारी बहुत पालना की। ❍

तुम सरलचित्त..पृष्ठ 21 का शेष..

आये। इस बार भी मैं अकेली रही। न्यूयार्क वाली मोहिनी बहन टुअर पर निकली थी तो कुछ दिन मेरे साथ रही।

दादी ने योगबल से सेवाएँ की

हमने दादी जानकी को निमंत्रण दिया। जयन्ती बहन तथा रजनी बहन की टीचर थी दादी । पूना में दादी से इन्होंने ज्ञान लिया था इसलिए उनका दादी से बहुत प्यार था। बड़ी दीदी ने दादी जानकी को एक-दो मास की छुट्टी दी थी। जयन्ती बहन ने कहा, दादी आयेगी तो मैं सेंटर पर रहूँगी, घर में नहीं रहूँगी। दादी जानकी लन्दन आये। दादी जी मुरली सुनाते थे, मैं और जयन्ती बहन क्लासेस, कोर्सेस कराते थे। नये-नये स्टूडेन्टस् को दादी योग कराती थी। विदेशियों को वो योग का प्रवाह अच्छा लगता था। दादी हिन्दी में क्लास कराते थे, जयन्ती बहन इंग्लिश में ट्रान्सलेट करती थी। दादी की दृष्टि और योग उन लोगों को बहुत अच्छा लगता था। दादी ने अपने योगबल से सेवा की। मुझे अपने अलौकिक जीवन में कभी साक्षात्कार तो नहीं हुआ लेकिन प्रवचन या योगाभ्यास कराने के बाद जिज्ञासु अपना अनुभव सुनाते हैं कि आपके द्वारा हमें लाइट का या देवी का साक्षात्कार हुआ। तो ऐसी रंगत बाबा सेवाक्षेत्र में अपने बच्चों के द्वारा दिखाते रहते हैं।

भारत हो या विदेश, सेवा के प्रारम्भ में कुछ तकलीफें होती ही हैं, बाद में सब सहज हो जाता है। मेरी सभी भाई-बहनों प्रति यही शुभकामना है कि आने वाली परिस्थितियों में सम्पूर्ण पास होने के लिए इतना योगबल जमा करें कि स्वयं भी सुरक्षित रहें और दूसरों को भी सकाश दे सकें। ❍

बाबा ने कहा,

तुम कमाल कर सकती हो

ब्रह्माकुमारी शशीप्रभा, माउंट आबू

मैंने बहुत ही छोटी आयु में करनाल में ज्ञान प्राप्त किया। हमारे लौकिक परिवार में सादगी और भक्ति भावना थी। माताजी मंदिर में जाती थी, पिताजी गुरुद्वारे में जाते थे। सभी स्वतंत्र विचारों वाले थे। हम बच्चे कभी मंदिर चले जाते थे, कभी गुरुद्वारे चले जाते थे। बाल्यकाल से ही मेरा स्वभाव बहुत शांत था, ज्यादा बोलती भी नहीं थी। शांत होते हुए भी आध्यात्मिकता के संस्कार अंदर थे। पड़ोस में एक-दो परिवार ईश्वरीय ज्ञान का अध्ययन करते थे। वे हमारी माताजी को कहते थे, आप भी ब्रह्माकुमारी सेन्टर पर चलो। सेंटर पर उस समय मनोहर दादी जी थीं। सेन्टर बिल्कुल घर के पास ही था, गुरुवार के दिन भी हम बच्चे खेलते हुए सेंटर पर चले जाते थे और भोग आदि खाकर आते थे, बड़ा अच्छा लगता था।

योग में देखा सुंदर दृश्य

एक शिवजयंती के अवसर पर सेन्टर में बड़ा कार्यक्रम रखा गया था। हम भी उसमें शामिल हुए। कार्यक्रम बड़ा अच्छा लगा। उसके बाद हमारी माता जी ने सात दिन का कोर्स किया। हम बच्चे भी माताजी के साथ जाते थे, ज्ञान तो नहीं समझते थे पर क्लास में बैठ जाते थे। शुरू से लेकर मेरा स्वभाव रहा है कि मैंने कभी ज्ञान के विषय में कोई प्रश्न नहीं किया। जो ज्ञान बाबा ने सुनाया, अंदर ही अंदर समाता गया। पहले दिन जब मैं क्लास में बैठी तो देखा, सभी खुली आँखों से योगाभ्यास कर रहे थे। सभी को देखकर मैं भी वैसे ही योग में बैठ गई। बैठे-बैठे क्या देखती हूँ कि दूर से एक लाइट आ रही है। लाइट नज़दीक मेरे पास आते-आते बहुत बड़ी हो गई जिसको मैं सहन नहीं कर सकी तो आँखों से बहुत आँसू बहने लगे। जो बहन योग करा रही थी उसने मेरी ऐसी स्थिति को देख समझा कि इसने कोई भयानक दृश्य देखा है। योग पूरा होने के बाद उसने मुझे अपने पास बुलाया, बहुत स्नेह दिया और पूछा, आपने क्या देखा लेकिन मैंने क्या देखा, मुझे बताना ही ना आये। मैं और ज़ोर से रोने लग गई। वह बहन मुझे अपने कमरे में ले गई, बहुत प्यार दिया और फिर पूछा, क्या देखा। मैंने कुछ नहीं बताया। कुछ समय के बाद धीरे-धीरे ज्ञान समझ में आने लगा, बाबा की मुरली सुनने लगी, तो उस दृश्य का अर्थ समझ में आया। हम बिछुड़े हुए बच्चे बाबा से 5000 वर्षों के बाद मिले हैं तो यह बाप और बच्चे के पहले मिलन का सुंदर दृश्य था।

बाबा ने बहलाया साक्षात्कारों द्वारा

मैंने सारा ज्ञान डायरेक्ट मुरली से ही सीखा। दूसरी बार जब मैं योग में बैठी थी तो देखा कि नदी का बहुत सुंदर किनारा है, चारों तरफ बहुत सुंदर बगीचा है, बीच में श्रीकृष्ण और गोप-गोपियाँ रास कर रहे हैं। मुझे बड़ा अच्छा लग रहा था। कुछ सेकंड में देखा कि श्रीकृष्ण और गोप-गोपियाँ मेरे पास आ रहे हैं। थोड़ी दूरी से श्रीकृष्ण ने हाथ के इशारे से कहा, आओ, इधर आओ। मेरा शुरू से स्वभाव था मैं किसी के भी नज़दीक नहीं जाती थी, थोड़ा दूर-दूर रहती थी। मैं घबरा गई लेकिन वह दृश्य आँखों के सामने से हटता ही नहीं था। इस प्रकार प्यारे बाबा ने समय-समय पर कई दिव्य नज़ारे दिखाए। मधुबन (आबू पर्वत) आने से पहले ही बाबा ने इस पावन नगरी का भी साक्षात्कार करा दिया था। मुझे पहले ही साक्षात्कार हो गया था कि मैं आबू

पर्वत की पहाड़ियों पर पहुँच गई हूँ और पहाड़ियों के दोनों तरफ बहुत सुंदर-सुंदर वरदान लिखे हुए हैं जिन्हें मैं पढ़ रही हूँ। सामने देखती हूँ तो पाती हूँ कि बाबा खड़े हैं। लेकिन इन साक्षात्कारों का अन्दर ही अन्दर अनुभव करती रहती थी, किसी को बताती नहीं थी।

सिर पर हाथ रखते ही शक्ति आ गई

सन् 1962 में जब साकार बाबा दिल्ली में आये, तब घर से छुट्टी लेकर बाबा से मिलने के लिए गई। बाबा को देखते ही लगा कि बहुत सुंदर लाइट मेरे सामने है। जो दृश्य साक्षात्कार में देखा था वही सामने पाया। बाबा ने कहा, आओ बच्चे, बाबा ने मेरे सिर के ऊपर जैसे ही वरदानी हाथ रखा, मेरे में एकदम शक्ति आ गई। ऐसी शक्ति कि मुझे कुछ न्यारा-निराला कार्य करना है। बाबा भी कह रहे थे, बच्ची तुम्हें बहुत कुछ करना है, कमाल करनी है, कुमारियाँ क्या नहीं कर सकती हैं, तुम भी कमाल कर सकती हो। मुझे घर में किसी प्रकार का बंधन नहीं था। जिस समय हम ज्ञान में आये, करनाल में बहुत सारी कुमारियाँ थीं, सब बंधन वाली थीं। वे छिप-छिप कर आती थीं, कभी स्कूल के बहाने से, कभी सखी से मिलने के बहाने से। हमारे घर में भोजन भी सात्विक था। कोई भी बंधन न होने के कारण हल्का-सा मन का ढीलापन कभी आता था लेकिन बाबा की बात याद आते ही कि तुम्हें कमाल करनी है, ढीलापन दूर हो जाता था। मेरे साथ की जितनी भी कुमारियाँ थीं, बहुत चुस्त थी, डान्स, ड्रामा आदि में भाग लेती थीं लेकिन मैं शांत थी।

बाबा ने भरा समझाने का गुण

मैं जब पढ़ाई कर रही थी तब सन् 1967 में एक बार छुट्टियों में पहली बार मनोहर दादीजी के साथ मधुबन आई और बाबा के साथ का अनुभव करने के बहुत सुंदर अवसर मिले। जब-जब मनोहर दादी बाबा के पास जाती तो बाबा पूछते, वह कुमारी कहाँ है, उसे भी साथ ले आओ। इस प्रकार हर बार दादी के साथ बाबा के पास जाने का सौभाग्य मिला। दिन में दो-तीन बार ऐसे अवसर मिल जाते। कभी खाने के समय, कभी क्लास के बाद और कभी वैसे ही रूहरिहान करने के लिए बाबा हाथ पकड़ कर ले जाते थे। मई-जून, 1967 में आबू पर्वत पर पहली-पहली विश्व नवनिर्माण प्रदर्शनी लगी थी, सभी वरिष्ठ दादियाँ उसमें शामिल हुई थीं। यह प्रदर्शनी म्यूज़ियम के सामने लगाई गई थी। प्रदर्शनी के उद्घाटन के समय तथा समापन के समय पर मैं वहीं थी। बाबा ने मेरी भी सेवा की ड्यूटी लगाई थी। जब पहली-पहली प्रभात फेरी करके हम पांडव भवन के गेट पर आये तो (बाबा साहित्य के स्टाल के पास पहाड़ी पर खड़े थे) बाबा के हाथ में गुलाबपाश था, हम सब नारे लगाते हुए आ रहे थे। बाबा ने गुलाबाशी हमारे ऊपर की तो इतना अच्छा लग रहा था कि सूरज की किरणें भी पड़ रही हैं और चंद्रमा की ठंडक भी पहुँच रही है। मैं प्रदर्शनी में रोज दो-तीन पार्टियाँ समझाती थी। हर रोज रात को बाबा के पास जाकर हम प्रदर्शनी का सारा समाचार सुनाते थे। बाबा मुझे पूछते थे, बच्ची, आज क्या समझाया? मैं बताती थी, बाबा आज दो पार्टियाँ समझाईं। बाबा उमंग दिलाते थे कि कल तीन समझाना। जब समझाती थी तो अन्दर से ज्ञान स्वत: बाहर प्रकट होता था। बाबा समझाते थे, हर एक की नब्ज देखकर समझाना है, बाबा के कहने से वह गुण स्वत: आ जाता था। अनुभव कहता है कि यह गुण भी बाबा ने ही भरा।

बाबा गिट्टी मुँह में डालते थे

हर रोज़ क्लास के बाद सब दादियाँ और वरिष्ठ भाई चेम्बर में आकर बैठते थे। मनोहर दादी के कारण मुझे भी मौका मिलता था। बाबा मीठी-मीठी रूहरिहान करते थे। बच्चे बाबा से प्रश्न पूछते थे, बाबा जब मेरी तरफ भी दृष्टि डालते थे, मुझे बड़ा अच्छा लगता था इसलिए कि बड़ों के बीच में मुझ छोटी-सी को भी इतना भाग्य मिला है। बाबा के साथ दो-तीन बार भोजन करने का भी सौभाग्य इस

आत्मा को मिला। बाबा का भोजन बहुत ही सात्विक और योग की शक्ति से परिपूर्ण शक्तिशाली होता था। बाबा लच्छू बहन से कहते थे, बच्ची, छोटी-छोटी रोटी लेके आना। बाबा रोटी में सब्जी डालकर गोल गिट्टी बनाकर कहते थे, मुँह खोलो, और गिट्टी मुँह में डालते थे। एक-दो बार बाबा हाथ पकड़कर झोपड़ी की तरफ भी ले गए, बगीचे में सैर भी कराते थे।

बाबा ने आपेही मेरी बुद्धि को खींच लिया

परिवार से कोई बंधन तो था नहीं इसलिए मेरे जीवन का लक्ष्य स्पष्ट नहीं था कि समर्पित जीवन बनाऊं या नहीं। ब्रह्माकुमारी तो हूँ लेकिन समर्पित का कोई सवाल नहीं था। बिना पुरुषार्थ ही लाइन क्लीयर थी। दुनिया में तीन प्रकार के लोग होते हैं – एक, जो बहुत मेहनत करके लक्ष्य को पाते हैं, दूसरे, जो किसी की मदद के आधार से लक्ष्य को पाते हैं, तीसरे, जिन्हें अपने-आप भाग्य लक्ष्य प्राप्त करवा देता है। यह श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिए मैंने कोई विशेष मेहनत नहीं की। बाबा ने आपे ही मेरी बुद्धि को खींच लिया। बाबा ने ही मेरे लिए सब कुछ किया। मुझे अभी भी महसूस होता है कि बाबा ही सब करते हैं। बाबा स्वयं सिखा कर शक्ति दे सेवा कराते हैं।

बाबा कहते थे, कुमारियों को विश्व सेवा करनी है

अभी जहाँ डिस्पेन्सरी है वहाँ उन दिनों दो टाइप मशीनें रखी होती थीं। एक अंग्रेज़ी की और दूसरी हिन्दी की। दादा विश्वरतन टाइप करते थे। एक दिन बाबा ने मुझे बुलाया और पूछा, बच्ची, तुम (लौकिक जीवन में) क्या कर रही हो? मैंने कहा, बाबा, मैं इंग्लिश टाइपिंग और शॉर्टहैंड सीखती हूँ। बाबा ने कहा, अच्छा, टाइप सीखी है, बहुत अच्छा, बच्ची, तुम करके दिखाओ। मैं तो सीख ही रही थी, थोड़ा-सा टाइप करके बाबा को दिखाया। बाबा ने कहा, बच्ची ठीक है, अब मुरली की इंग्लिश में ट्रांसलेशन होगी, फिर यह विश्व में जाएगी, विश्व के अंदर सेंटर खुलेंगे, तुम यहाँ रहो, इंग्लिश मुरली टाइप करना। मैं तो सोच में पड़ गई। बाबा ने पूछा, क्या हुआ बच्ची? मैंने कहा, बाबा मैं तो नौकरी करूँगी। बाबा ने कहा, हाँ-हाँ बच्ची, नौकरी करना फिर तुम आ जाना जल्दी। उस समय कुमारियों का एक बहुत बड़ा ग्रुप मधुबन में था। हिस्ट्री हाल में बाबा कुमारियों से रोज़ मिलते थे। कुमारियों के लिए बाबा मुरली में कहते थे, कुमारियों को विश्व की सेवा करनी है, नौकरी की टोकरी नहीं उठानी है। मुरली के बाद भी बाबा कुमारियों से मिलते थे। बीच-बीच में दृष्टि भी देते थे। उस समय लगता था कि हम उड़ गये हैं। मैं मधुबन में डेढ़ मास रही। मधुबन से जाने के पश्चात् कुछ समय लौकिक नौकरी भी चण्डीगढ़ में की।

बड़ों के संग का भाग्य मिला

नौकरी करने के समय प्रात: और शाम को जब भी योग में बैठती थी तो बाबा बहुत अनुभव कराते थे कि बच्ची, समय कम है, आपको विश्व सेवा करनी है। बाबा के अव्यक्त होने के बाद मधुबन में भट्ठियाँ शुरू हो गईं। मैं भी भट्ठी करने आई। यहाँ तो ऐसे लगे जैसे साकार बाबा सामने हैं। साकार बाबा के शब्द बार-बार कानों में गूंजे, बच्ची, तुम्हें बहुत कुछ करना है, विश्व सेवा करनी है। भट्ठी के बाद मैं यहाँ ही रही। यहाँ से दीदी और दादी ने मुझे कोलकाता भेजा। वहाँ दो मास रही। फिर पटना में एक साल रही, एक वर्ष काठमाण्डू-नेपाल में रही। इसके बाद सन् 1974 से दादी, दीदी ने मुझे मधुबन में रख लिया। शुरू से लेकर दादियों और दीदियों के साथ क्लियर कनेक्शन था। मेरा भाग्य है कि छोटी होते हुए भी मुझे बड़ों का संग मिला, बड़ों के संग में पुरुषार्थ अपने आप होता है। मधुबन में आकर बाबा, दीदी, दादी, निर्वैर भाई इन सबसे बहुत कुछ सीखा।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1.राजकोट- 'द फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भ्राता निजार जुमा, भ्राता एन्थोनी फिलिप्स, लेखक भ्राता मानसिंग चावड़ा, मारवाड़ी कॉलेज के एच.ओ.डी.भ्राता प्रवीण जैन, प्राचार्या बहन कपूर तथा ब्र.कु.भारती बहन। **2.आगरा (कमला नगर)-** 'द फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भ्राता मनीष राज स्वरूप, भ्राता नंदकिशोर मंघारानी, ब्र.कु.विमला बहन, भ्राता सुनील मंघारानी, भ्राता निजार जुमा तथा भ्राता अन्थोनी फिलिप्स। **3.इम्फाल (मणिपुर)-** 'लिविंग हार्ट' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए मणिपुर के वित्त और परिवहन मंत्री डॉ.केएच. रतनकुमार, ब्र.कु.कमलेश बहन, ब्र.कु.मीरा बहन तथा ब्र.कु.नीलिमा बहन। **4.उज्जैन (श्वेतनगर)-** 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का शुभारम्भ करते हुए म.प्र.स्कूल शिक्षा मंत्री भ्राता पारस जैन, जिलाधीश भ्राता कविन्द्र कियावत, एस.पी.भ्राता अनुराग, ब्र.कु.ऊषा बहन, ब्र.कु.रामप्रकाश सिंघल तथा अन्य। **5.जलपाईगुड़ी-** उत्तर बंगाल विकास मंत्री भ्राता गौतम देव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.नीतू बहन। **6.जलगाँव-** महाराष्ट्र के महसूल मंत्री भ्राता एकनाथराव खडसे का स्वागत करते हुए ब्र.कु.अश्विनी बहन। **7.कोटा-** सम्पूर्ण ग्राम विकास मेले का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सरला बहन, राजस्थान के परिवहन राज्यमंत्री भ्राता बाबूलाल वर्मा तथा अन्य ब.कु.बहनें। **8.मुंगरा बादशाहपुर-** उ.प्र.के सांस्कृतिक मंत्री भ्राता सुभाष पाण्डे को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.ऊषा बहन। **9.नालंदा-** नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'ओमशांति कुंज भवन' का उद्घाटन करते हुए बिहार के ग्रामविकास तथा संसदीय मामलों के मंत्री भ्राता श्रवणकुमार, ब्र.कु.रानी बहन तथा अन्य। **10.फालना-** नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'दिव्य ज्योति भवन' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी। साथ में ब्र.कु.मीरा बहन, ब्र.कु.कंचन बहन तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 25th of each Month &
Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : January, 2015.

भुवनेश्वर-
भारत के राष्ट्रपति महामहिम भाता प्रणव मुखर्जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.लोना बहन। साथ में है ब्र.कु.तपस्विनी बहन तथा अन्य।

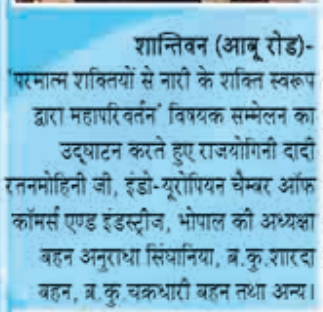

शान्तिवन (आबू रोड)-
'परमात्म शक्तियों से नारी के शक्ति स्वरूप द्वारा महापरिवर्तन' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, इंडो-यूरोपियन चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज, भोपाल की अध्यक्षा बहन अनुराधा सिंघानिया, ब्र.कु.शारदा बहन, ब्र.कु.चक्रधारी बहन तथा अन्य।

मुंबई (बोरिवली)-
'द फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.दिव्या बहन, ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन, महाराष्ट्र की कैबिनेट मंत्री बहन पंकजा मुण्डे, भाता निजार जुमा, अभिनेता भाता दिलीप जोशी तथा निर्देशक भाता आशित जोशी।

झाडेश्वर (भरुच)-
'द फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भाता निजार जुमा, भाता एन्थोनी फिलिप्स, बहन मार्गरिट, श्री सरदार विद्या मण्डल इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलोजी के निदेशक जीवराज भाई पटेल, ब्र.कु.प्रभा बहन तथा अन्य।